चन्दामामा
अक्तूबर १९७२

Photo by: P. M. VARAPRASADA RAO

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.
सिर्फ़ २५ पैसे
PARLE POPPINS FRUITY SWEETS 25 Paise
नयी पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी—
पांच फलों के स्वादवाली १३ स्वादिष्ट गोलियां—
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।
पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो
everest/122b/PP hin

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पाँचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

अपनी रक्षा आप...

डैडी, सुनील ने आज सवेरे मुझे मारा
तुमने वापिस क्यों नहीं मारा ? अपनी रक्षा आप करना सीखो !

देखो, घूँसे से बचने के लिए या तो पीछे या बाजू हट जाओ या ऐसे झुक जाओ कि वार खाली जाय।

घूँसे को कलाई पर भी रोक सकते हो।

या उसे भुजा या कन्धे पर भी झेल सकते हो।

हाँ ऐसे। 'बॉक्सिंग' यानी अपनी रक्षा आप करने का यह तुम्हारा पहला सबक है।

बाप रे, बड़ी देर हो गयी। चलो सो जाएँ। रोहित, तुमने दाँत तो साफ़ कर लिए हैं न ?
डैडी, मैं रोज़ सवेरे तो करता हूँ।

नहीं बेटे, ऐसे नहीं चलेगा। तुम्हें अपने दाँत हर रात और सवेरे ब्रश करने ही चाहिए। इससे दाँतों में फँसे सभी अन्न-कण निकल जाएँगे; दाँतों में सड़न नहीं होगी। तुम्हें मसूढ़ों की भी मालिश करनी चाहिए ताकि वे स्वस्थ और मज़बूत रहें।

चलो, हम दोनों फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से अपने दाँत ब्रश कर लें।
हाँ, डैडी!

Forhan's
FOR THE GUMS
फ़ोरहॅन्स
- दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट।

अमर वाणी

शरदि न वर्षति गर्जति,
वर्षंति वर्षासु निस्स्वोनो मेघः;
नीचो वदति न कुरुते,
सुजनो न वदति करोत्येव । ॥ १ ॥

[शरत ऋतु के बादल गरजते हैं, लेकिन बरसते नहीं । पर वर्षा ऋतु के मेघ बिना गरजे बरसते हैं । नीच व्यक्ति बातें तो बनाता है, पर काम नहीं करता । पर सज्जन पुरुष ज्यादा बात नहीं करता, काम करता है ।]

अजा युद्धे, ऋपिश्राद्धे, प्राभाते मेघडंबरे,
दंपत्योः कलहे भैव बह्वारंभो लघुक्रिया । ॥ २ ॥

[बकरियों की लड़ाई, ऋपियों के श्राद्ध कर्म, प्रातःकाल के मेघों तथा दंपति के कलह में बाहरी गरजन अधिक है, पर क्रिया शून्य है ।]

नश्यत्य नायकम्कार्यं
तथैव्र शिशुनायकम्
स्त्रीनायकम् तथोन्मत्त
नायकम् बहु नायकम् । ॥ ३ ॥

[बिना मालिक के किये जाने वाले काम तथा छोटे बच्चे, स्त्रियाँ, पागल और अनेक व्यक्तियों के नेतृत्व में होने वाले काम बिगड़ जाते हैं ।]

क्रिया, अक्रिया, दुष्क्रिया

चन्दामामा

संस्थापक: नागिरेड्डी

संचालक: 'चक्रपाणी'

इस महीने की बेताल कथा "जनता का शासक" में एक उत्तम नीति है। जनता की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति किये बिना जो शासक केवल अपने यश के वास्ते जनता के लिए अनावश्यक सुविधाएँ करवा देता है, वह जनता का सच्चा शासक कभी नहीं हो सकता।

'यथा राजा तथा प्रजा' कथा की नीति तो सर्व विदित है। राजा में जो दुर्गुण होते हैं, वे जनता में भी प्रतिबिंबित होते हैं।

वर्ष: २५ अक्तूबर १९७२ अंक: ४
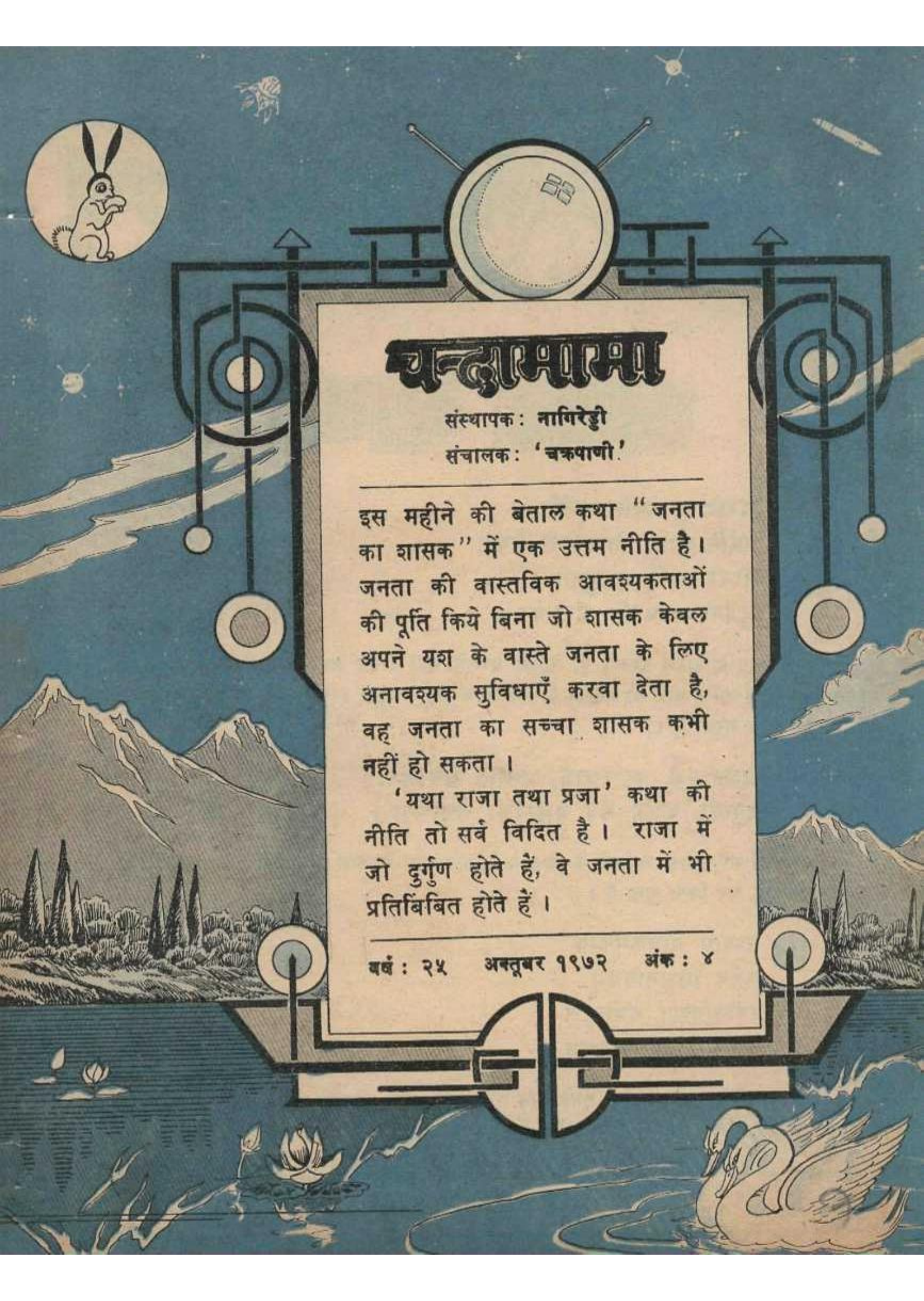
यथा राजा तथा प्रजा

विजयपुर का राजा अपनी प्रजा को अनेक प्रकार से सताया करता था, तरह-तरह के कर लगाता, कलाकारों को तो पास तक पटखने न देता।

एक दिन दरबार लगा हुआ था, उस वक़्त राजा ने अपने दरबारियों से एक सवाल पूछा–"तुम लोग यह बताओ कि मेरा शासन अच्छा है? मेरे पिताजी का शासन अच्छा था या मेरे दादा का?"

दरबारी जानते थे कि राजा को जो भी उत्तर दे, उसके मीन मेख निकाल कर तंग करेगा, यदि किसी एक का शासन अच्छा बताया जाय तो दूसरे के शासन की कमियाँ पूछ बैठेगा। यह सोच कर सभी दरबार एक दूसरे का मुँह देखते रह गये।

मंत्री ने दरबारियों का बुरा हाल देखा, इसलिए खड़े होकर कहा–"महाराज, आपके दरबार में जो लोग हैं, इनमें से अधिकांश लोगों ने सिर्फ़ आपके शासन को ही देखा है। इसलिए आपके सवाल का जवाब यहाँ का कोई भी व्यक्ति न दे सकेगा।"

यह बात सही भी थी, इसलिए राजा ने मंत्री को आदेश दिया–"तब तो ऐसे व्यक्ति को बुलावा दो जिसने तीनों पीढ़ियों के शासन को देखा हो।"

फिर क्या था, राजभट शहर में गये, जो भी बूढ़ा दिखाई दिया, उससे पूछने लगे–"क्या आपने राजा के दादा का शासन देखा है?" दरबार की बात जल्द ही आग की भांति शहर में फैल गयी थी, इसलिए सब कोई बचने के ख्याल से यही उत्तर देने लगे–"हमने नहीं देखा।" लेकिन राजभटों को इस बात का डर सता रहा था कि किसी एक को बुलाये बिना उसकी जान की ख़ैर नहीं।

राकेश कुमार

सारे शहर का चक्कर लगा कर आखिर वे एक पान की दूकान के सामने बैठ गये। पानवाला बड़ा बातूनी था, उसने राजभटों से पूछा–"भाई, बात क्या है?"

दूकानदार भी बूढ़ा था, इसलिए राजभटों ने उससे पूछा–"क्या तुम हमारे राजा के दादा को जानते हो?"

पानवाला तैश में आ गया और बोला–"मैं राजा के दादा को क्यों नहीं जानता? हम दोनों ने एक ही दिन एक गुरु के पास शिक्षा शुरू की।"

"तब तो तुम राजा के पिता को भी जानते होगे, चलो।" राजभटों ने कहा।

"किसलिए?" पान वाले ने पूछा।

राजभटों ने असली बात बतायी, यह बात सुनने पर पानवाले के मन में घबराहट पैदा हो गयी। भगवान का स्मरण करके पान वाला राजभटों के साथ हो लिया।

राजा ने दरबारियों से जो सवाल पूछा था, वही सवाल पान वाले से भी पूछा।

"महाराज, मैं पान बेचना अच्छी तरह से जानता हूँ, लेकिन शासन के बारे में मेरी जानकारी नहीं के बराबर है। लेकिन आपके दादा के जमाने से आज तक मुझमें जो तबदीलियाँ हुईं, सो बताये देता हूँ। इनके आधार पर आप ही निर्णय कर लीजिये कि किनका शासन अच्छा है।" पान वाले ने जवाब दिया।

"वे तबदीलियाँ क्या हैं?" राजा ने पूछा। पान वाले ने यों बताया–"महाराज, आपके दादा के ज़माने में मेरे पड़ोस में एक बूढ़ा और उसकी पोती रहा करते थे। एक दिन बूढ़े ने मुझे बुला कर कहा–"बेटा, मेरी मौत निकट आ गयी है, मैं मरने के पहले अपनी पोती की शादी करना चाहता था, लेकिन कर नहीं पाया। मैं अपनी पोती के वास्ते दो हज़ार दीनार छोड़ के जा रहा हूँ। इसलिए तुम कोई अच्छा रिश्ता देख इसकी शादी करो और ये दीनार उसे दे दो।" इन शब्दों के

साथ वह दो हज़ार दीनार मेरे हाथ देकर मर गया ।

मैंने बूढ़े को वचन दिया, उसकी पूर्ति के लिए कई जगह ढूँढ़-ढांढ कर बूढ़े की पोती के लिए एक अच्छा रिश्ता क़ायम किया। उसकी शादी करके दो हज़ार दीनार उसे सौंप दिया और उस लड़की को ससुराल भेज दिया ।

इस तरह कई साल गुज़र गये । आपके दादा का स्वर्गवास हो गया और आपके पिता ने शासन का भार संभाला । उन दिनों में बूढ़े की पोती मेरी दूकान के सामने से गुज़रते दिखाई दी । उसे देखते ही मैंने सोचा-"मैंने कैसी भूल की है । वह लड़की बिलकुल नहीं जानती थी कि बूढ़े ने मेरे हाथ दीनार दे रखे हैं । मैंने वे दीनार क्यों न रख लिये ?"

"फिर हाल ही में वह युवती मुझे दिखाई दी, इस बार मुझे अपनी बेवकूफ़ी पर पश्चात्ताप हुआ । महाराज, यदि मैं सचमुच बेवकूफ़ न होता तो उस लड़की के साथ शादी करता और वे दीनार भी रख लेता ।" इन शब्दों के साथ पानवाले ने आप बीती सुनायी ।

यह वृत्तांत सुन कर राजा बहुत खुश हुआ और उसे एक सौ दीनार पुरस्कार देकर उसे भेज दिया । राजा ने अपने मन में सोचा कि अपने दादा के शासन काल की अपेक्षा अपने पिता के शासन काल में उसकी बुद्धि का विकास हो गया है और अपने शासन काल में तो उसकी बुद्धि पूर्ण रूप से विकास को प्राप्त हुई है ।

मगर दरबारी लोग राजा की मूर्खता पर मन ही मन हँस पड़े । उन लोगों ने सोचा कि राजा का दादा धर्मात्मा है, उसके शासन काल में प्रजा गलत ढंग से सोचती न थी, इस राजा का पिता तो दुष्ट नहीं, मगर धन की लालसा ज़्यादा रखते थे । पर इस राजा में धन की लालसा के साथ धर्म की भावना भी लुप्त हो गयी । इन तीनों राजाओं के बीच जो अंतर था, उसे स्पष्ट करने वाली कहानी पान वाले ने सुनायी ।

धोखेबाजी

एक शहर में दीनू नामक एक गरीब था। वह रोज़ जंगल में जाता, लकड़ी काट कर शहर में बेच देता। इस तरह उसके दिन आराम से बीतने लगे।

एक दिन दीनू जंगल में जा रहा था, उसे एक झाड़ी में एक कंगण दिखाई पड़ा। उसे देखते ही दीनू ने अपने मन में सोचा-"वनदेवी ने मुझ पर अनुग्रह किया है। इसे बेचकर कुछ समय तक मैं अपने दिन आराम से बिता सकता हूँ।" यह सोचकर दीनू शहर में लौट आया।

दीनू दूसरे दिन सवेरे एक जौहरी के पास गया और बोला-"महाशय, मुझे यह कंगण जंगल में मिला है। आप इसे लेकर मुझे इसकी क़ीमत दे दीजिये।"

जौहरी ने उस कंगण की बारीकी से जाँच की और अपने मन में सोचा-"ऐसा क़ीमती कंगण इसे जंगल में कैसे मिला होगा? यह झूठ बोलता है। इसे यह चुरा लाया होगा। किसी न किसी तरह इसे हड़पना होगा।" यह सोच कर उसने दीनू से कहा-"इस वक़्त मेरे पास इसकी सही क़ीमत की रक़म नहीं है। कल तुम इसे मेरे पास लेते आओ। मैं रुपये देकर खरीद लूँगा।" इन बातों के साथ जौहरी ने वह कंगण उसके हाथ देकर वापस भेज दिया।

दीनू उस कंगण को अपने घर में बड़ी सावधानी से छिपा कर जंगल में लकड़ी काटने चला गया।

इस बीच जौहरी राजा के पास गया और शिकायत करते हुए बोला-"महाराज, दीनू नामक एक लकड़हारे ने मेरे घर से एक कंगण चुराया है। मुझे निश्चित रूप से मालूम हुआ कि मेरा कंगण उसके पास है। उसके घर की तलाशी लेकर कृपया

राजेन्द्र कपूर

मुझे वह कंगण वापस दिला दीजिये।" राजा ने तुरंत अपने भटों को बुलाकर आदेश दिया—"तुम लोग लकड़हारे दीनू को पकड़ लाओ।"

भटों ने दीनू के घर से लौट कर बताया—"महाराज, दीनू लकड़ी काटने जंगल में चला गया है।"

इस पर राजा ने जौहरी से बताया—"जौहरी, तुम कल सुबह फिर दरबार में आ जाओ, लकड़हारे की चोरी को साबित करवा कर तुम्हारा कंगण तुम्हें वापस दिला देंगे।"

अपनी चाल के चलते देख जौहरी बड़ा खुश हो गया, उसने सोचा कि वह कंगण उसे अवश्य मिल जायगा।

दूसरे दिन जौहरी दरबार में आया। राजा ने अपने भटों को भेज कर दीनू को कंगण के साथ दरबार में बुला भेजा। दीनू के आते ही राजा ने पूछा—"क्यों रे, तुमने जौहरी के यहाँ से इस कंगण की चोरी की?"

"महाराज, मैंने इस कंगण की चोरी नहीं की। यह मुझे जंगल में पड़ा मिल गया है। इसे बेचकर मैं अपने थोड़े दिन आराम से बिता देना चाहता था, इसलिए इसे जौहरी के यहाँ बेचना चाहा। जौहरी ने मुझसे बताया कि आज मेरे पास

पूरी रक़म नहीं है, कल आओ, पूरी रक़म दूँगा। बस! इससे बढ़कर मैं कुछ नहीं जानता!" लकड़हारे दीनू ने जवाब दिया।

"महराज, यह सब सफ़ेद झूठ है।" जौहरी ने कहा।

मंत्री ने दीनू से कंगण लेकर राजा के हाथ दिया। राजा ने उस कंगण को देखा तो उसकी आँखें चमक उठीं। उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

बात यह थी कि कुछ दिन पहले राजा शिकार खेलने जंगल में गया था, उस वक़्त उसके दायें हाथ का कंगण कहीं खो गया। उसकी बड़ी खोज करायी गयी, लेकिन

कोई फायदा न रहा। वही यह कंगण था! राजा को अब जौहरी की धोखेबाजी का पता चल गया। पर राजा ने जौहरी की परीक्षा लेनी चाही, इस विचार से जौहरी को वह कंगण दिखाते हुए पूछा– "क्या तुम जो कंगण खो चुके हो, वह यही है?"

"जी हाँ, महाराज! यही मेरा कंगण है।" उसे पाने की लालसा से जौहरी ने झट जवाब दिया।

उसी वक़्त मंत्री ने जौहरी से पूछा– "तुम इसका जोड़ा भी लेते आओ।"

जौहरी यह बात सुनकर एकदम चौंक पड़ा, फिर हिम्मत बटोर कर बोला– "महाराज! इसका जोड़ा तो कभी का खो गया है! मुझे संदेह है कि इसी दीनू ने उसे भी हड़प लिया होगा।"

इस पर दीनू घबराये हुए स्वर में बोला–"महाराज! मुझे एक बात साफ़ मालूम होती है कि गरीबों पर चोरी का इलज़ाम लगाना बड़ा आसान है।"

राजा हँस पड़ा और बोला–"अबे, इस बार की चोरी का इलज़ाम तो मुझ पर लगाया जा रहा है।" इन शब्दों के साथ राजा ने अपने बायें हाथ का कंगण निकाल कर सभी दरबारियों को दिखाया।

जौहरी का दिल बैठ गया। सभी दरबारी एकदम आश्चर्यचकित हो गये।

इसके बाद राजा ने दरबारियों को संबोधित कर कहा–"मैं जंगल में शिकार खेलते अपने दायें हाथ का कंगण खो गया था। वह इस दीनू को मिल गया। उसे इसने जौहरी को बेचना चाहा। जौहरी के मन में इस कंगण को हड़पने की दुर्बुद्धि पैदा हो गयी। इसने धन का अभाव बता कर कंगण को दीनू के हाथ रहने दिया और उस पर चोरी का इलज़ाम लगाने फ़रियाद की। अब सबके सामने इसके धोखे का राज खुल गया।"

इसके बाद राजा ने जौहरी को कड़ी सज़ा सुनायी। उसका कंगण लानेवाले दीनू को अच्छा पुरस्कार देकर भेज दिया।

यक्ष पर्वत
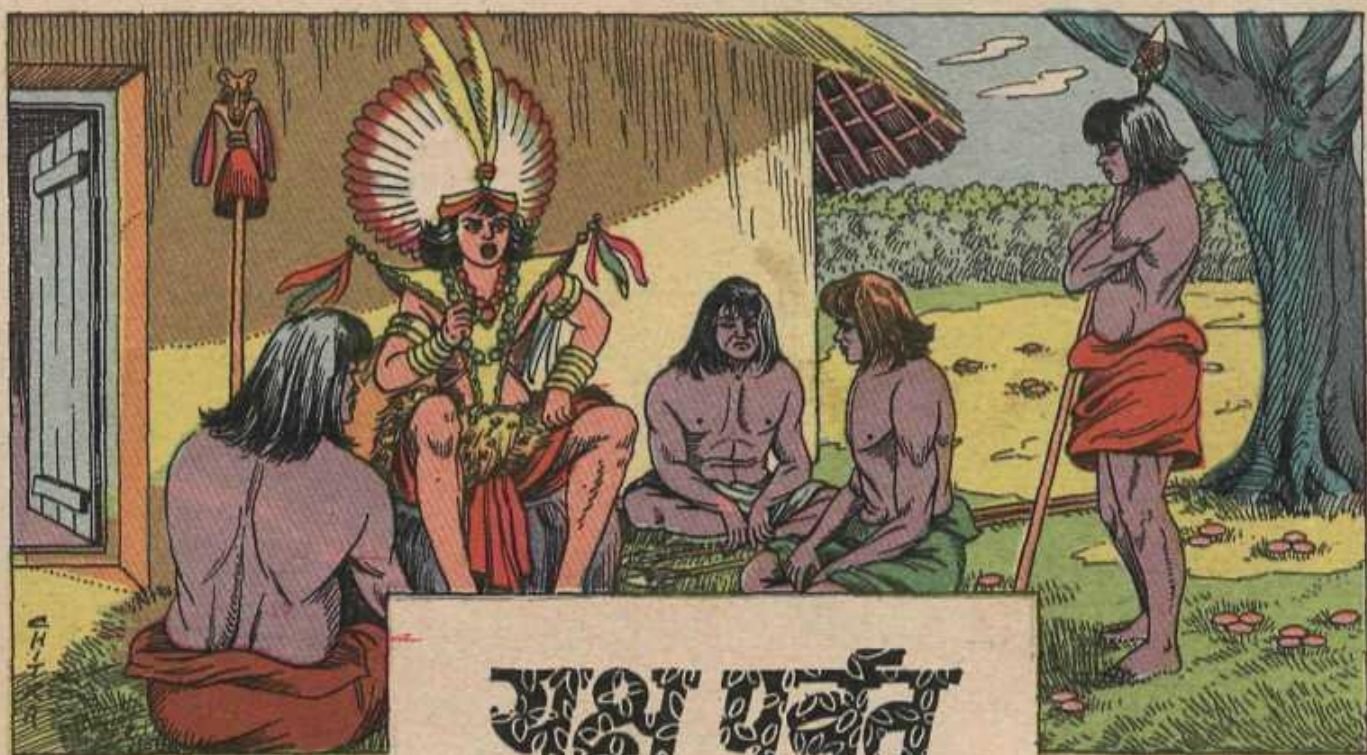
[४]

[जंगल में शिकार खेलकर दो क्षत्रिय युवक खड्गवर्मा तथा जीवदत्त अपनी कुटी में लौट आये, तब उन्होंने विघ्नेश्वर पुजारी के द्वारा लुटेरों की करतूतों की बातें सुनीं। उन लुटेरों का पता लगाने के लिए गैण्डे की जाति के चार युवक भेजे गये। बाद...]

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने सोचा कि गैण्डे की जाति के चार युवक लुटेरों का पता लगा कर लौट आयेंगे, तब तक भोजन समाप्त कर यात्रा के लिए तैयार हो जाना चाहिए। यह सोचकर वे रसोई के काम में लग गये। गैण्डे की जाति का राजा अरण्यमल्ल तथा उसके अनुचर कुटी के सामने बैठकर लुटेरों के बारे में चर्चा करने लगे।

"इन लुटेरों का खात्मा किये बिना हमारे लिए कोई सुरक्षा नहीं है। हमारी फसल जब कटाई के लिए एकदम तैयार हो जायगी, तब ये लुटेरे इन्हें लूटने के लिए फिर से आ सकते हैं!" अरण्यमल्ल ने कहा।

इस पर मंत्री शिलामुखी ने सर हिलाते हुए कहा–"महाराज, हमारे योद्धा लुटेरों को देख नहीं डरे, बल्कि उनके वाहन

समाप्त कर कुटी से बाहर आने दीजिये। उनसे बात करेंगे।" बिघ्नेश्वर पुजारी ने समझाया।

ये लोग बात कर ही रहे थे कि तभी खड्गवर्मा तथा जीवदत्त भोजन समाप्त कर कुटी से बाहर आये। विघ्नेश्वर पुजारी ने जीवदत्त को अरण्यमल्ल का विचार कह सुनाया।

"शिकार खेलकर कुटी में लौटते ही मेरे मन में यह विचार आया था, लेकिन तब तक लुटेरे इस प्रदेश को छोड़ दूर चले गये थे। ऊँट गैण्डे से भी तीन गुने ज़्यादा तेजी के साथ दौड़ सकता है। जब उन्हें यह संदेह होगा कि हमारे द्वारा उन्हें ख़तरा होने की संभावना है, तभी वे लोग अपने वाहनों की मदद से भाग सकते हैं। इसलिए यदि हमें उनका अंत करना है तो मौक़ा देख हमें उस वक़्त उन पर हमला बोल देना है, जब वे लोग विश्राम करते होंगे।" जीवदत्त ने सुझाया।

"ऐसा ही करेंगे, महाराज! क्या मैं अपने पचास योद्धाओं को साथ ले आऊँ?" अरण्यमल्ल ने उत्साह में आकर कहा।

जीवदत्त ने हँसकर कहा–"अरण्यमल्ल! इतने योद्धाओं को साथ ले उन लुटेरों का अनुसरण कैसे किया जा सकता है? वे लोग हमें आसानी से पहचान लेंगे और भाग

बने विचित्र जानवरों को देख घबरा गये। अब तो उन्हें मालूम हो गया कि ये जानवर ख़तरनाक नहीं हैं, इसलिए इस बार हमारे योद्धा उन दुष्टों का सामना करके उनका वध करने में पीछे न हटेंगे।"

"क्षत्रिय युवकों की मदद लेकर हम अभी उनका पीछा करके उनका सर्वानाश करेंगे तो ज़्यादा उत्तम होगा! पर देखना यह कि ये क्षत्रिय युवक कहाँ तक हमारे विचार से सहमत होंगे?" अरण्यमल्ल ने कहा।

"युद्ध का नाम सुनने पर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त खान-पान की चिंता भी भूल बैठेंगे। लुटेरे स्वर्णाचारी को भी उठा ले गये हैं। क्षत्रिय युवकों को भोजन

खड़े होंगे। इसलिए मैं और खड्गवर्मा दोनों पहले चले जायेंगे। पहले इस बात का पता लगा लेंगे कि वे लोग आज की रात को कहाँ पर पड़ाव डालते हैं। मौक़ा देख पहले हम उनके नेता का वध करेंगे, बाक़ी लोगों को या तो बन्दी बनायेंगे या उनको इस प्रदेश से भगाने की कोशिश करेंगे।"

एक घड़ी के बीतते-बीतते एक गैण्डेवाला योद्धा हाँफते उधर आ पहुँचा जो लुटेरों का पता लगाने गया था। वह गैण्डे पर सवार था। गैण्डा थकावट के मारे हाँफ रहा था।

अपने अनुचर को देख अरण्यमल्ल उद्विग्नता में आकर पूछ बैठा–"क्या तुम्हें लुटेरे दिखाई दिये? तुम्हारे साथ निकले और तीन योद्धा कहाँ?"

उस योद्धा ने संक्षेप में सारी बातें कह सुनायीं। जब वह अपने तीन साथियों के साथ एक पहाड़ी नाले के पास पहुँचा तब लुटेरे उस नाले को पार कर उत्तरी दिशा में जा रहे थे। लुटेरों की आँख बचाकर गैण्डेवाले योद्धाओं ने उनका अनुसरण किया, जब वे पहाड़ी आंचल में बहनेवाली एक नदी के किनारे से होते हुए गुजरने लगे, तब यह समाचार देने के लिए वह चला आया है।
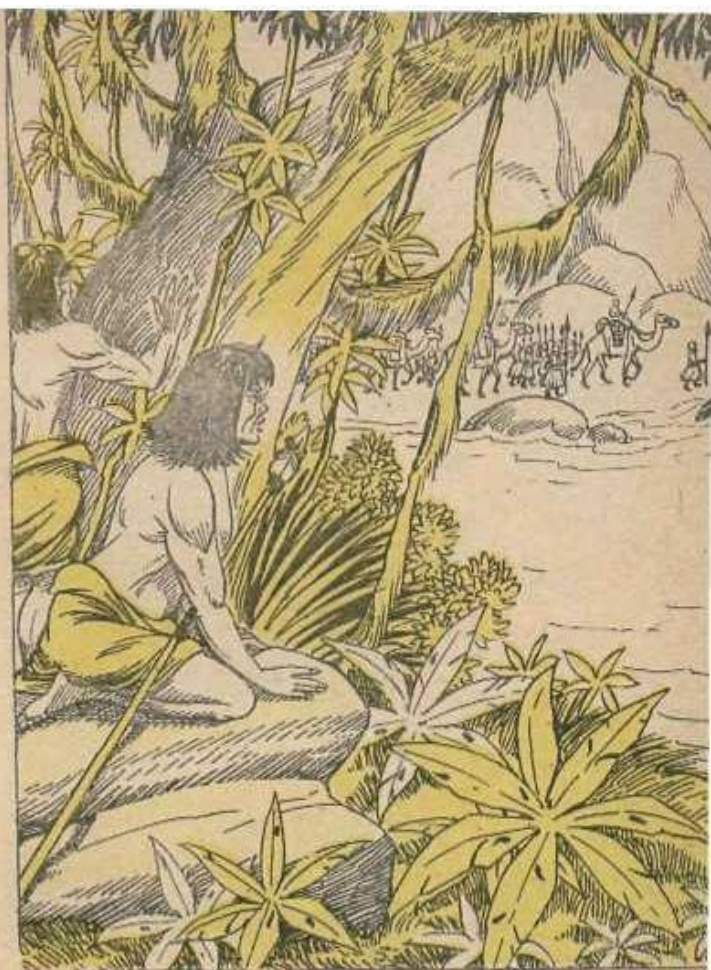
"बाक़ी तीन योद्धा क्या लुटेरों का अनुसरण करते जा रहे हैं?" जीवदत्त ने पूछा।

"जी हाँ, साहब! हम लोगों के उनसे मिलने तक वे लुटेरों की आँख बचाकर उनका अनुसरण करते रहेंगे।" गैण्डेवाले योद्धा ने कहा।

जीवदत्त पल भर मौन रहा, तब खड्गवर्मा से बोला–"खड्गवर्मा, अब हम रवाना हो सकते हैं। सूर्यास्त के बाद ही हमें लुटेरों के उस प्रदेश में जाना उचित होगा। इसके बाद मौक़ा देख उनका अंत करेंगे। साथ ही हमें स्वर्णाचारी को आज रात को ही छुड़ा लाना होगा। वरना वे लोग उसका वध कर बैठेंगे।"

इसके बाद खड्गवर्मा तथा जीवदत्त अपने अपने धनुष-बाण और तलवार लेकर सोच ही रहे थे कि गैण्डों पर सवार होकर निकले या पैदल! तभी विघ्नेश्वर पुजारी ज़ोर से बोल उठा–"क्षत्रिय वीरो! यदि आप उन लुटेरों का आसानी से अनुसरण करना चाहते हैं तो उन्हीं की सवारी का उपयोग कर सकते हैं। हमारे सिंह के छौने ने जिस लुटेरे को मार डाला, उसका ऊँट यहीं कहीं रह गया है, उसकी खोज करा लीजिये। ऊँट पर शीघ्र आप उनसे मिल सकते हैं।"

ये बातें सुनते ही अरण्यमल्ल अपने अनुचरों से बोला–"विघ्नेश्वर पुजारी ने मौक़े पर याद दिलाया। हम लोग उस विचित्र जानवर की बात भूल ही गये। वह कुटी के पीछे कहीं झाड़ों में घास चरता होगा। जाओ, उसे पकड़ लाओ।"

तुरंत गैण्डे की जाति के चार युवक कुटी के पीछे के जंगल की ओर बढ़े, एक घड़ी के अन्दर ऊँट को पकड़ लाये। खड्गवर्मा और जीवदत्त ऊँट पर सवार हुये। जो युवक लुटेरों का समाचार लाया था, वह ऊँट के आगे चलते क्षत्रिय युवकों को रास्ता बतलाने लगा। सूर्यास्त के समय उन लोगों ने लुटेरों को नदी के किनारे एक पहाड़ के पास से गुजरते देखा। इस बीच गैण्डे की जाति के तीन और युवकों ने उनको देखो और वे भी उनसे आ मिले।

संध्या के समय लुटेरों के नेता ने अपने अनुचरों को नदी के तट पर पड़ाव डालने का आदेश दिया। सभी लुटेरों ने अपने अपने वाहनों से उतरकर ऊँटों को निकट के पेड़ों से बाँध दिया और रसोई बनाने के काम में जुट गये। उनमें से कुछ लोग जंगल में सूखी लकड़ियाँ लाने चले गये, तो बाक़ी लोग पत्थरों से चूल्हें बनाकर आग जलाने लगे।

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त गैण्ड की जाति के योद्धाओं के साथ थोड़ी दूर पर

झाड़ियों में छिप गये और स्वर्णाचारी की टोह लेने लगे। मगर स्वर्णाचारी लुटेरों के बीच उन्हें कहीं दिखाई नहीं दिया। जीवदत्त के मन में यह संदेह पैदा हुआ कि कहीं लुटेरों ने स्वर्णाचारी को मार्गमध्य में मार तो नहीं डाला। उसने खड्गवर्मा से पूछा–"खड्गवर्मा! स्वर्णाचारी कहीं दिखाई नहीं देता। शायद इन लुटेरों ने उसे मार डाला हो!"

"ऐसा नहीं हो सकता। मुझे तो लग रहा है कि स्वर्णाचारी इन लोगों को धोखा देकर जान से भाग गया होगा। वह तो बड़ा ही होशियार है। मगर उसका पता लगा लेना बड़ा ही आसन है! तुम यहीं रहो, मैं अभी आ जाता हूँ।" ये शब्द कहते खड्गवर्मा तलवार निकाल कर तेजी के साथ चल पड़ा।

जीवदत्त ने उसे रोक कर पूछा–"तुम यह क्या करने जा रहे हो?"

"सूखी लकड़ियों के वास्ते नदी के किनारे से कुछ लुटेरे जंगल में आ गये हैं। उनमें से एक को प्राणों के साथ पकड़ ले तो हमें सच्ची बात का पता लग जायगा।" खड्गवर्मा ने जवाब दिया।

जीवदत्त ने थोड़ी देर तक सोचा, तब चेतावनी देते हुए कहा–"तुम्हारी यह चाल तो बड़ी अच्छी है, तुम अपने साथ गैण्डे के एक युवक को भी लेते जाओ। उन दुष्टों को इस बात का पता न चले कि हम लोग यहाँ पर छिपे बैठे हैं। पर ख्याल रखो कि काम अवश्य बन जाय।"

खड्गवर्मा गैण्डे की जाति के एक युवक को साथ ले जंगल की ओर चल पड़ा। उसने थोड़ी ही दूर पर लुटेरों के दल के एक व्यक्ति को देखा। वह चिल्लाने ही वाला था कि खड्गवर्मा ने लपक कर उसका गला दबाया।

लुटेरे न केवल सूखी लकड़ियों को इकट्ठा कर रहे थे, साथ ही सूखी डालों को भी खींचकर तोड़ने का प्रयत्न

पीछे से आकर अपने दोनों हाथों से लुटेरे का कंठ दबाया। उसी समय गैण्डे की जाति का योद्धा भाला लेकर आया और इशारे के द्वारा लुटेरे को सूचित किया कि यदि वह चिल्लायेगा तो उसके कलेजे में भाला चुभो दिया जायगा।

लुटेरा जान के डर से थर-थर कांपने लगा। खड्गवर्मा उसकी गर्दन पकड़कर खड़ा करके बोला–"चुपचाप मेरे साथ चलो तो तुम्हारी जान का कोई खतरा न होगा, लेकिन यदि तुम चिल्ला कर अपने साथियों को सूचना देने की कोशिश करोगे तो तुम्हारा सर काट दिया जायगा।"

लुटेरा चुपचाप खड्गवर्मा के पीछे चला। जीवदत्त ने लुटेरे को देख प्रसन्न हो खड्गवर्मा से कहा–"लगता है कि तुमने बड़ी सरलता से दुश्मन को पकड़ लिया है। क्या इसने स्वर्णाचारी का समाचार दिया?"

"मैंने अभी तक उससे कोई सवाल नहीं पूछा। वहाँ पर आसपास में इसके कुछ साथी घूम रहे थे, इसलिए मैं इसको सीधे तुम्हारे पास ले आया।" खड्गवर्मा ने कहा।

"अरे लुटेरे, तुम लोगों ने पहाड़ी नाले के पास के खेतों से फ़सल काट डाली

कर रहे थे। इसे देख खड्गवर्मा ने एक उपाय सोचा। उसने अपने अनुचर के द्वारा एक सूखी डाली को तुड़वा दी, ज्यों ही वह बड़ी आवाज़ के साथ नीचे गिर पड़ी त्यों ही वह दौड़कर पास के एक पेड़ के पीछे जा छिपा। सूखी डाली के गिरने की आवाज सुनकर एक लुटेरा युवक बड़ी ख़ुशी के साथ सर हिलाते उसे उठा ले जाने के लिए वहाँ पर आया। इस जल्दबाजी में लुटेरे ने यह नहीं सोचा कि आखिर पेड़ की डाल टूटकर कैसे गिरती है।

लुटेरा युवक झुककर सूखी डाली को खींचने जा रहा था तभी खड्गवर्मा ने

है न? उस वक़्त तुमने स्वर्णाचारी को बन्दी बनाया, उसे तुम लोगों ने क्या किया?" जीवदत्त ने लुटेरे से पूछा।

"मैं सच बताऊँ तो मुझे प्राणों से छोड़ देंगे न?" लुटेरे ने कांपते स्वर में पूछा।

"ज़रूर तुमको छोड़ देंगे। लेकिन झूठ बताकर हमें धोखा देने की कोशिश की तो तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे! समझें!" जीवदत्त ने चेतावनी दी।

"साहब, आचारी रास्ते भर में चिल्लाता रहा–'मुझे बचाओ, मुझे बचाओ' कहकर, असल में मेरे नेता उसको मार डालना नहीं चाहते थे। इसलिए उसे ज्वार के भुट्टोंवाले बोरे में कंठ तक बांध दिया। इस वक़्त वह नदी के किनारे हमारे सामानों के ढेर में पड़ा हुआ है।" लुटेरे ने सच्ची बात बता दी।

"आज रात को तुम लोग उसी जगह रहेंगे न? कल सुबह यहाँ से फिर रवाना हो जायेंगे?" जीवदत्त ने फिर पूछा।

"जी हाँ! अब मेरी जान नहीं लेंगे न? मैंने सारी बातें बता दी हैं।" लुटेरे ने कहा।

"तुमने जो बातें बतायीं, उनकी सचाई का पता लगने तक हम तुम को
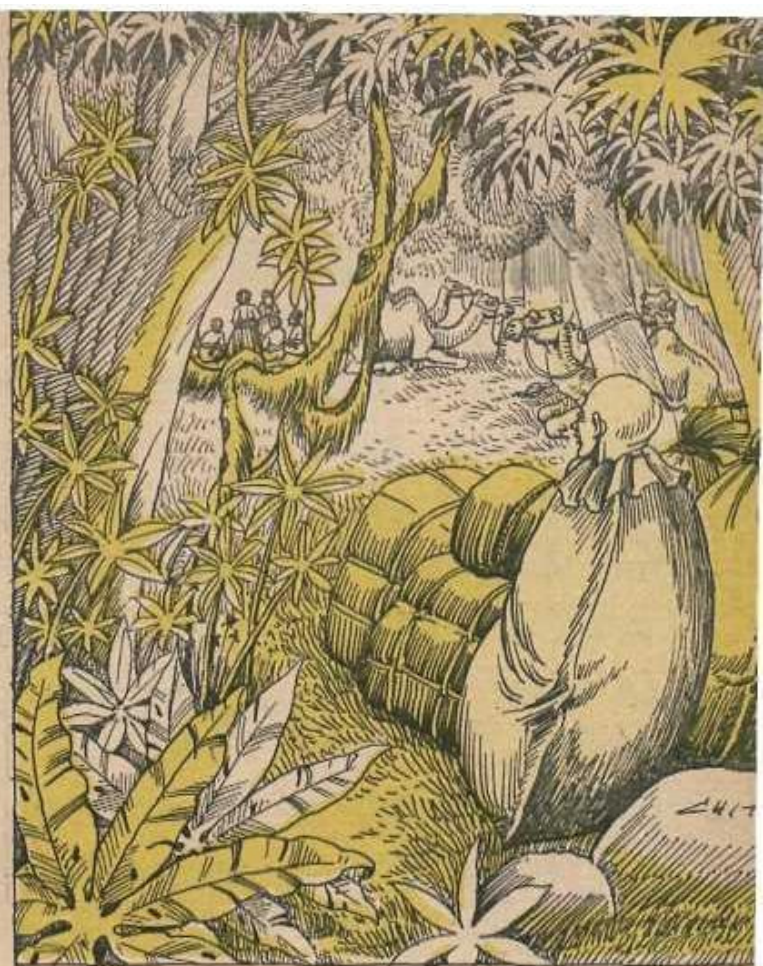
यहीं पर एक पेड़ से बांधकर रख छोड़ेंगे। तुम्हारे मुँह में पेड़ के पत्ते ठूँस देंगे, ताकि तुम चिल्लाकर अपने साथियों को सूचना न दे सके।" इन शब्दों के साथ जीवदत्त ने गैण्डे की जातिवाले एक युवक को इशारा किया।

गैण्डे की जाति के युवक ने लुटेरे को दूर ले जाकर जंगली बेल से एक पेड़ के साथ उसे बांध दिया। तब तक अंधेरा फैल चुका था। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त एक पेड़ पर चढ़कर लुटेरों के पड़ाव की ओर ध्यान से देखने लगे। एक जगह छोटा अलाव जल रहा था। उसके आगे लुटेरों का नेता बैठ कर अपने चार-पाँच

प्रमुख अनुचरों के साथ बात कर रहा था। बाक़ी लुटेरे खाना खाकर सोने के लिए चटाइयाँ और बोरे ज़मीन पर बिछा रहे थे।

"खड्गवर्मा, और थोड़ी देर बाद हम इन लुटेरों पर हमला करेंगे। पहले हमें स्वर्णाचारी को मुक्त करना होगा। इसके बाद गैण्डे की जाति के एक युवक को भेजकर ऊँटों को वहाँ से भगा देंगे, तब हम गैण्डों पर सवार हो लुटेरों पर बाणों की वर्षा करेंगे। उनके नींद से जागने के पहले ही जो भी हमारे हाथ आये, उन्हें मार डालेंगे, बाक़ी लोगों को यहाँ से खदेड़ देंगे।" जीवदत्त ने अपनी योजना बतायी।

"वाह, बड़ी अच्छी योजना है! हमारा पहला काम तो स्वर्णाचारी को छुड़ाने का है। इसके बाद..." खड्गवर्मा बीच में ही रुक गया और आश्चर्य के साथ लुटेरों के पड़ाव की ओर संकेत करते बोला– "जीवदत्त! उस पहाड़ी गुफा में मशाल की रोशनी देखते हो! वह जटाधारी विकृत आकृतिवाला कौन है? एक दूसरा भयंकर आकृतिवाला अपने मंत्रदण्ड से उसे पीट रहा है।"

जीवपत्त ने उस पहाड़ी गुफ़ा की ओर नज़र डाली। उस गुफा में एक मशाल जल रहा था। उसकी रोशनी में एक जटाधारी विकृत आकृतिवाला तथा काले वस्त्रधारण किये मंत्र दण्ड को लुटेरों की ओर हिलानेवाला एक मांत्रिक भी दिखाई दिये।

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त अत्यंत आश्चर्य के साथ उन विचित्र आदमियों की ओर देख ही रहे थे, तभी जटाधारी भयंकर ध्वनि के साथ गरज उठा, जिससे सारा जंगल और पहाड़ प्रतिध्वनित हो उठे। वह भयंकर गर्जन करते गुफ़ा से बाहर दौड़ आया। उसके ललाट पर अग्निकण जैसी कोई चीज़ जलते व बुझ रही थी। उसके हाथ में एक सफ़ेद गदा था।

(और है)

जनता का शासक

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–" राजन, तुम जनता की प्रशंसा पाने के लिए इस प्रकार अर्ध रात्रि के समय श्रम उठाते हो, तो समझ लो कि जनता विवेक नहीं रखती, बल्कि अपना उपकार करनेवाले की ही निंदा करती है। इसके उदाहरण स्वरुप में तुमको हिमशेखर की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में सुवर्णदेश पर हिमशेखर नामक राजा शासन करता था। जनता को सुखी रखने का इरादा उसके लिए एक व्यसन सा बन गया था। वह सदा सोचा करता कि कौन से काम करने से प्रजा का जीवन

बेताल कथाएँ 23

अधिक सुखमय और आनंदमय बन सकता है। इस इरादे की पूर्ति के लिए वह जनता के हित के लिए कोई न कोई काम किया करता था। राज्य के कोने-कोने में तालब और कुएँ खुदवाना, सड़कें बनवाना, सड़कों के किनारे पेड़ लगवाने, सरायों तथा मंदिरों का निर्माण कराने या उद्यान और बगीचे लगवाने के काम चलते थे। इस तरह प्रजा के लिए अनेक सुविधाएँ करने पर भी राजा को संतोष नहीं होता था बल्कि वह यही सोचता कि करने के लिए और अनेक काम पड़े हुये हैं।

एक बार हिमशेखर के मन में यह इच्छा पैदा हुई कि उसने जनता के सुख के लिए जो प्रयत्न किये, वे कहाँ तक सफल हुये हैं। गुप्तचरों के द्वारा जनता के विचारों का उसे पता लग जाता था। गुप्तचर राजा से कहा करते थे–"राजन, जनता सोचती है कि आपके शासन में प्रजा के लिए कोई कमी ही नहीं रह गयी है। सुवर्णदेश पृथ्वी का स्वर्ग है, इसलिए जनता अनेकों देवताओं की मनौतियाँ कर रही हैं कि आपका शासन हजारों साल तक बनाये रखे।"

फिर भी राजा ने सोचा कि मुझे यह जान लेना चाहिये कि जनता किन किन बातों में असंतुष्ट है, उन्हें तृप्त करने के लिए और क्या क्या किया जा सकता है। ये बातें खुद जानने के विचार से राजा एक दिन वेश बदल कर राजधानी में घूमने लगा।

राजा ने देखा कि सर्वत्र लोग अपने अपने काम करने में मग्न हैं। मगर उनकी कठिनाइयाँ वह समझ नहीं पाया। आख़िर राजा ने देखा कि एक जगह चार-पांच आदमी इकट्ठे हो दुनियादारी की बातें कर रहे हैं। राजा उनके निकट गया।

उनमें से एक आदमी कह रहा था–"अन्य देशों के लोग हमारे देश की बड़ी तारीफ़ कर रहे हैं। वे कहते हैं कि हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति एक एक राजा है।"

"वे लोग हमारे राजा के राजमहल को देख लें तो ऐसी बातें कभी नहीं कहेंगे। उनके भोग-विलासों की बात क्या कही जाय! वे कैसे ठाठ से रहते हैं। क्या दो-चार तालाब खुदवाने से हम सब राजा बन गये? राजा लोग इसलिए कुएँ खुदवाते हैं, सरायें बनवाते हैं कि सब कोई उनकी प्रशंसा करें। क्या देश में सरायों के बनवाने और तालाबों के खुदवाने से उस देश के लोग राजा बन गये?" दूसरे ने अपना विचार प्रकट किया।

बाक़ी लोगों ने सर हिला कर कहा– "हाँ, हाँ, तुम ठीक कहते हो!"

यह बातचीत सुनने पर राजा सर झुका कर आगे बढ़ गया। उसने निश्चय कर लिया कि जब प्रजा यह सोचती है कि मैं प्रजा के हित के लिए जो कुछ करता हूँ, वे कार्य मैं अपनी प्रशंसा पाने के लिए करता हूँ, मैंने जो कुछ श्रम किया, वह सब व्यर्थ हो गया। मेरे श्रम के द्वारा जनता को कोई संतोष प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए प्रजा के हित के लिए आइंदा कोई कार्य नहीं करना चाहिये।

कुछ साल बीत गये। एक वर्ष राज्य भर में कहीं वर्षा नहीं हुई। खेत सब सूख गये। अकाल पड़ा। खाने के अभाव में सुवर्णदेश के लोग भूख से तड़पने लगे।

राजा अपनी प्रजा को तड़पते देख नहीं पाया। उसका दिल पसीज उठा। राज्य के गोदामों से अनाज़ निकलवा कर सबको

खिलाने का प्रबंध किया। अपने खाज़ाने से अपार धन खर्च करके दूर के देशों से अनाज मंगवाया।

राज कर्मचारी जनता में अन्न का दान ठीक से कर रहे हैं या नहीं, इसकी जानकारी पाने के लिए राजा वेश बदल कर सर्वत्र घूमने लगा। इस बार लोगों के मुँह से राजा ने जो बातें सुनीं, उससे उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही।

"वाह! हमारे राजा जैसे व्यक्ति करोड़ों में से एक होगा। हमने पूर्व जन्म में कोई पुण्य किया होगा, इसलिए हमें ऐसे व्यक्ति राजा के रूप में प्राप्त हुए। ये तो हमारे भाग्य देवता हैं!" ऐसी बातें राजा ने अनेक मुँहों से सुनीं।

बेताल ने यह सुनाकर कहा-"राजन, हिमशेखर शुरू से ही जनता के सुख के वास्ते परिश्रम करता आया है। उसके बारे में लोगों ने पहले हलका क्यों सोचा? बाद को उसीको लोगों ने आसमान पर क्यों चढ़ाया? इसका समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों जवाब दिया-"हो सकता है कि हिमशेखर ने जनता के सुखों में वृद्धि की हो। लेकिन जनता ने उनकी कामना नहीं की थी। राजा ने उस समय उनके कष्टों को दूर नहीं किया। जिसकी चाह नहीं की गयी है, ऐसा कोई उपकार भी हो जाय तो कोई उनकी प्रशंसा नहीं करता। अनायास ही प्राप्त होनेवाले सुखों से आनंद की उपलब्धि नहीं होती। मगर अकाल पड़ने पर जनता ने अपने कष्टों को पहचाना और उन कष्टों को दूर करनेवाले राजा की प्रशंसा की। इसीलिए लोगों ने राजा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और उसे आसमान पर चढ़ाया। इसमें आश्चर्य की तो कोई बात ही नहीं है।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

पतिव्रता

अर्मीनिया देश में एक बेकार व्यक्ति था जिसकी पत्नी बड़ी सुंदर थी।

उसने एक दिन अपनी पत्नी से कहा– "मैं दूसरे देश में जाकर कोई नौकरी करूँगा और धन कमा कर तब लौटूँगा।" इसके बाद अपनी पत्नी और बच्चों की देखभाल करने की जिम्मेदारी अपने छोटे भाई को सौंप कर वह घर से निकल पड़ा। उसे जहाँ भी नौकरी मिली, काम करते धन कमाने लगा।

उसकी पत्नी बड़ी अच्छी औरत थी। वह अपने देवर का पालन-पोषण करते उसके वास्ते बड़ी मेहनत करने लगी। आख़िर भाभी पर देवर की आँख पड़ी, मगर भाभी तो पतिव्रता थी, इसलिए उसकी दाल नहीं गली।

तीन साल बाद उसने अपने घर ख़बर भेज दी कि वह धन कमा कर घर लौट रहा है। वह जिस दिन घर लौटनेवाला था, उस दिन उसका छोटा भाई गाँव की सीमा पर अपने बड़े भाई से जा मिला।

"मेरी पत्नी और बच्चे कुशल हैं न?" बड़े भाई ने छोटे भाई से पूछा।

भाभी ने लाज-शरम कभी का छोड़ रखा है। धीरे से तुम्हीं को मालूम हो जायगा न।" छोटे भाई ने शिकायत की।

दोनों घर लौटे। पत्नी अपने पति के लौटने पर बहुत प्रसन्न हुई। उसने अपने पति के चरण धोये, सेवा-शुश्रूषा की। मगर उसका पति मौन रह गया। जब वे लोग खाना खा रहे थे तब कुछ लड़कों ने उस घर पर पत्थर फेंकें और उस औरत को गालियाँ देने लगे। उन लड़कों से ऐसा करने के लिए छोटे भाई ने ही प्रोत्साहित किया था। बाद को उसीने बाहर जाकर लड़कों को डांट-डपट कर भगा दिया।

अपने पति के मुँह से बात तक न निकलते देख पत्नी को बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा, शायद उसका पति ज़्यादा धन कमा नहीं पाया है, इसलिए वह चिंतत है। कुछ दिन तक वह घर के एक कोने में मौन बैठा रहा। आख़िर एक दिन वह अपनी पत्नी को अपने साथ जंगल में ले गया, वहाँ पर उसकी हत्या करके उसकी लाश को वहीं छोड़ वह घर लौट आया।

तुर्की के एक सौदागर अपने व्यापारी दल के साथ उस ओर आ निकला। उसने वहाँ पर एक झरना देखा। वह सौदागर उस रास्ते से कई बार निकला था, पर वहाँ पर कोई झरना दिखाई न दिया था। आज उस झरने के पास उसे एक औरत की लाश भी दिखाई दी। तुर्की सौदागर ने अपने मन में सोचा–"चरित्रहीन पत्नी का वध उसके पति ने किया होगा।"

सौदागर के दल ने आग सुलगा कर रसोई बनाना शुरू किया। उनके पास सिर्फ़ नमक में सुखायी गयी मछलियाँ थीं। वे लोग झरने से पानी लाये, उसमें मछलियों को डालते ही उनमें जान आ गयी और वे तैरने लगीं।

उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि झरने के पानी में जिलाने की ताक़त है, तुरंत उन लोगों ने झरने से पानी लाकर लाश पर डाल दिया। मरी हुई वह औरत जी बैठी।

सौदागर ने आश्चर्य में आकर पूछा–"तुम मेरे साथ चली आओ। मैं तुम्हारे साथ शादी करके तुमको आराम से रखूंगा।" सौदागर ने कहा।

"मैं इसके पहले ही एक आदमी के साथ शादी कर चुकी हूँ।" औरत ने जवाब दिया। सौदागर ने उस औरत को समझाया, लेकिन उसने साफ़ कह दिया कि जिसने उसे मारा है, वही उसका पति है और वह किसी दूसरे की पत्नी नहीं बन सकती।

सौदागर ने उस औरत को धमकी दी–"तुम अपनी इस करनी पर पछताओगी।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता।" औरत ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

सौदागर को उस औरत पर बड़ा क्रोध आया। उसने अपने अनुचरों के द्वारा चालीस हाथ गहरा गड्ढा खुदवाया और उसमें उस औरत को गिरा दिया, तब उस पर एक भारी चट्टान बंद करवा दी। दूसरे दिन वह अपने दल के साथ चला गया।

दूसरे दिन उस प्रदेश में तुर्की से एक और व्यापारी दल आया। उस दल के नेता ने सुना कि कहीं किसी औरत के रोने की आवाज़ हो रही है। अपने नौकरों को आदेश दिया कि इसका पता लगावे। नौकरों ने गड्ढे पर से चट्टान हटा दी। रस्सों की मदद से एक सुंदर औरत को बाहर निकाला और उसे अपने नेता के सामने खड़ा कर दिया।

व्यापारी उस औरत के सौंदर्य और यौवन को देख चकित हो गया और पूछा– "तुम कौन हो? यहाँ पर इस हालत में क्यों पड़ी हुई हो?"

उसने अपनी सारी कहानी सुनायी। सौदागर ने पूछा–"तुम मेरे साथ शादी करो, सारी तक़लीफ़ें दूर हो जायेंगी।"

"माफ़ कीजिये। पहले ही मेरी शादी हो चुकी है। मैं एक आदमी की धर्म पत्नी हूँ।" औरत ने जवाब दिया।

"जिसने तुमको मारा, उसीको फिर तुम अपना पति मानती हो?" सौदागर ने अचरज के साथ पूछा।

"आप तो बुजुर्ग हैं। आप जानते हैं कि एक औरत के साथ कैसा व्यवहार करना है? मैं भूख से परेशान हूँ।" औरत ने कहा।

सौदागर उसे अपने डेरे में ले गया, उसे खाना खिलाया। खाना खाने के बाद डेरे से बाहर निकलते वह औरत बोली– "मैं अभी आती हूँ।" ये शब्द कहकर वह अंधेरे में कहीं भाग गयी।

सौदागर बड़ी देर तक इस आशा से इंतज़ार करता रहा कि वह लौट आयेगी। पर बड़ी देर तक न लौटते देख उसने समझ लिया कि वह औरत भाग गयी है।

इसके बाद वह कुर्द जाति के एक गड़रिये के चंगुल में फँस गयी। उसने उस औरत को रोटी और दूध देकर अपनी बनानी चाही। उसके चंगुल से बचने के लिए वह एक नदी में कूद पड़ी और बह गयी। उस धारा में बह कर वह समुद्र में चली गयी। वहाँ पर एक मछुआ उसे बचा कर अपने घर लाया। मछुए की माँ ने उस औरत को गरम पानी से नहलाया और पहनने के लिए उसे अपनी पुरानी साड़ी दे दी।

मछुए ने उसकी सारी कहानी जान कर पूछा–"मेरे कोई औरत नहीं है। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

"मैं पहले ही एक व्यक्ति के साथ शादी कर चुकी हूँ। तुमको एतराज न हो तो मैं तुम्हारी बहन बन कर रह जाऊँगी।" औरत ने उत्तर दिया।

"तुम्हारी जैसी इच्छा!" मछुए ने कहा। उस दिन से लेकर मछुआ जब भी समुद्र में अपना जाल फेंकता, तब तब उसमें मोतियों की सीपियाँ आ जातीं। उनमें बड़े क़ीमती मोती भी होते थे। उन्हें ले जाकर मछुए ने जौहरी की दूकान में बेचा तो काफ़ी सोना मिला।

एक साथ इतने सारे सोने को देख मछुए का सर चकरा गया। खाने की कमी न हो, इस ख़्याल से मछुआ सोना देकर अनाज ख़रीदता गया। अनाज को

रखने के लिए उसने बड़े-बड़े गोदाम बनवाये।

कुछ साल बाद उस प्रदेश में एक भयंकर अकाल पड़ा। भूख से लोग तड़प रहे थे। मछुए ने अपने गोदामों के द्वार खोलकर सब में अनाज बांटना शुरू किया। वह औरत पुरुष की पोशाकें पहन कर भुखमरों की अच्छी देखभाल करती रही।

एक दिन उस औरत का पति आया, उसने बिनती की–"मैं और मेरे बच्चे भूख से मरे जा रहे हैं। थोड़ा अनाज दिला दो तो तुम्हारी मेहर्बानी होगी।"

"आप थोड़ी देर उस कमरे में बैठ जाइये। मैं सबको अनाज बांट कर अभी आ जाती हूँ।" औरत ने अपने पति से कहा। मगर उसने अपनी पत्नी को नहीं पहचाना। उसका विश्वास था कि उसकी पत्नी मर गयी है।

उसी दिन तुर्की के दो सौदागर और कुर्द जाति का गड़रिया भी अनाज की याचना करते वहाँ पर आ पहुँचे।

थोड़ी देर में सब में अनाज बांट कर वह औरत कमरे में आयी। उसने उन चारों का परिचय पूछा।

पहले उसने तुर्की के प्रथम सौदागर की ओर मुड़कर पूछा–"आपने कई विचित्र बातें देखी होंगी। हमें भी सुनाइये।"

"मैंने कई विचित्र बातें देखी हैं। मगर सबसे अद्भुत बात तो यह है कि मैंने एक मरी हुई औरत को जीते देखा।" इन शब्दों के साथ उसने पतिव्रता का हाल सुनाकर अंत में बताया कि उसीने उस औरत को गड्ढे में दफनाया है।

तुरंत दूसरे सौदागर ने बताया कि उस औरत को उसने गड्ढे में से बाहर निकलवाया, मगर उसने उसके साथ शादी करने से इनकार किया और अंधेरे में चकमा देकर वह भाग गयी।

इस पर कुर्द जाति का गड़रिया चिल्ला पड़ा–"मैंने जिस औरत को देखा, वह यही होगी। मैंने अपने साथ शादी करने

के लिए उसके साथ बलात्कार करना चाहा, मगर वह नदी में कूदकर बह गयी।"

इसके बाद उस औरत ने अपने पति की ओर मुड़कर पूछा–"आपने तो अपनी कहानी नहीं सुनायी?"

तब उसने गंभीर साँस लेकर कहा–"क्या बताऊँ? मैंने मूर्खतावश अपनी पत्नी को इन्हीं हाथों से मार डाला।"

"तुम्हें क्यों अपनी पत्नी को मार डालना पड़ा? उसने ऐसा कौन-सा पाप किया था?" पत्नी ने पूछा।

"मैं धन कमाने के लिए दूसरे देशों में गया। तीन साल बाद धन कमा कर लौटा तो मेरे छोटे भाई ने बताया कि मेरी पत्नी का चरित्र ख़राब हो गया है। इसलिए क्रोध में आकर मैंने उसे मार डाला। बाद को मुझे मालूम हुआ कि मेरी पत्नी ने कोई पाप नहीं किया है। उस दिन से मैं पश्चात्ताप करते कुढ़ता जा रहा हूँ।" पति ने कहा।

"यदि तुम्हारी पत्नी तुम्हें दिखाई दे तो क्या तुम उसको पहचान सकते हो?" पत्नी ने अपने पति से पूछा।

"क्या मैं अपनी पत्नी को पहचान नहीं सकता?" पति ने कहा।

वह औरत कोई बहाना करके बाहर गयी। थोड़ी देर बाद अपने पुराने वेश में लौट आयी। उसको देखते ही सौदागरों तथा गड़रिये ने भी पहचान लिया।

उसका पति अपनी पत्नी के पैरों पर पड़ कर भर्राई हुई आवाज़ में बोला–"मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अत्याचार किया है। मुझे माफ़ कर दो।"

"मैं इसी दिन के वास्ते ज़िंदा हूँ।" उस औरत ने कहा। बाक़ी तीनों लोग भी उससे क्षमा माँगकर अनाज ले वहाँ से चले गये।

"मैं घर नहीं लौटूंगी। आप घर जाकर हमारे बच्चों को यहीं पर ले आइये।" पत्नी ने अपने पति से कहा। इसके बाद वे लोग मछुए के घर रहते अपने दिन आराम से काटने लगे।

दो कनस्तर घी!

एक राजा के दरबार में एक वैणिक था। राजा का उस विद्वान के प्रति बड़ा स्नेह था। पर वह विद्वान बड़ा ही संकोचशील था। इसलिए राजा उसकी जरूरतों का पता लगावा कर उसके परिवार के पोषण में किसी बात की कमी न होने देता था।

वैणिक की कन्या विवाह के योग्य हो गयी थी। उसने अपनी कन्या के लिए एक अच्छा रिश्ता क़ायम किया। राजा ने विवाह के ख़र्च के लिए आवश्यक धन की सहायता भी की। मगर उस साल देश में बड़ा अकाल आ पड़ा था। इसलिए वैणिक ने बाक़ी सभी चीज़ों का प्रबंध तो कर लिया मगर घी इकट्ठा नहीं कर पाया।

आख़िर उसने मन में निश्चय कर लिया कि सिवाय राजा के कोई उसकी मदद कर न सकेगा। वह सीधे दरबार में तो गया, मगर राजा से घी माँगने में उसे संकोच हुआ।

दरबार में वैणिक वीणा बजाते-बजाते बीच में रुक गया।

"आपने वीणावादन बंद क्यों किया?" राजा ने पूछा।

"महाराज, घी चाहिये।" वैणिक झट बोल पड़ा, पर घबराते हुए फिर बोला—"महाराज, उंगलियों में घी मलने पर ही वादन मधुर हो सकता है।"

राजा ने असली बात ताड़ ली और पूछा—"वीणा के लिए कितने कनस्तर घी चाहिये?"

"दो कनस्तर पर्याप्त है, महाराज!" वैणिक ने उत्साह में आकर कह दिया।

एक दिन का सुलतान

[२]

दूसरे दिन सवेरे जाकर जफ़र तथा मनशूर ने खलीफ़ा को जगाया, वह तुरंत अबु अल हसन के सोनेवाले कमरे में जाकर पर्दों के पीछे छुप गया। वहाँ से उसे सब की आँख बचाकर सारी घटनाओं को देखने की सुविधा थी।

इसके बाद जफ़र और मनशूर राजमहल के सभी प्रमुखों, नारियों तथा गुलामों को साथ लेकर उस कमरे में पहुँचे। इस तरह वे सब अपनी अपनी जगह मौन खड़े रहे कि मानों नींद से जागनेवाला व्यक्ति सचमुच ही खलीफा हो!

एक गुलाम ने हसन की नाक के पास किसी द्रवपदार्थ में तर किया हुआ कपड़ा रख दिया, झट हसन तीन बार छींक उठा, तब उस गुलाम ने हसन की नाक और चेहरा गुलाब जल से पोंछ डाला। तब जाकर हसन की निद्रालुता जाती रही, उसने आँखें खोल दीं।

हसन ने देखा, वह जिस बिस्तर पर लेटा हुआ है, वह अद्‌भुत है। उस पर बिछायी गयी चादर लाल जरी से बुनी हुई थी, उसमें मोती टांके गये थे। उसने सर उठा कर देखा, कमरा बहुत ही विशाल था। उस कमरे की दीवारों पर क़ीमती रेशमी वस्त्र लटक रहे हैं। कमरे के कोनों में सोने और स्फटिक पात्र रखे हुए हैं। उसे लगा कि वह किसी दिव्य लोक में आ गया है।

हसन ने अपने चारों तरफ़ सुंदर स्त्रियों तथा गुलामों को खड़े देखा। वे सब झुक कर उसे सलामी दे रहे थे। उनके पीछे मंत्री, अमीर, पहरेदार और काले रंग के हिजड़े भी खड़े थे। एक ऊँचे आसन पर

गायक अपना संगीत सुनाने के लिए तैयार बैठे थे।

हसन के बिस्तर के पास ही खलीफा की पोशाकें रखी हुई थीं। उनके रंगों को देख हसन ने सोचा कि ये पोशाकें खलीफा के पहननेवाली हैं।

हसन ने फिर आँखें मूंद लीं। तब जफ़र उसके निकट जाकर बड़ी विनय से बोला–"हुजूर! आप बिस्तर से उठने की मेहर्बानी कीजियेगा! नमाज़ का वक़्त हो गया है।"

अबू अल हसन ने अपनी आँखें मल लीं। तब अपने हाथ पर खुद चिकौटा मार कर चिल्ला उठा–"बापरे बाप! मैं तो सपना नहीं देख रहा हू न? मैं खलीफा ही तो हूँ!...मगर उस व्यापारी के सामने मैंने अंट संट बक दिया, शायद उसीका यह नतीजा होगा!" यह कहकर वह फिर सोने की तैयारी करने लगा।

जफर ने फिर उसके पास जाकर कहा–"हुजूर! आप सुबह के नमाज के प्रति उदासीन मालूम होते हैं, इसलिए आपके सब गुलाम अचरज में आ रहे हैं, माफ़ कीजियेगा। आपके जागने का वक़्त हो चुका है।"

हसन का संकेत पाते ही वाद्य-वृन्द ने संगीत का आरंभ किया। गायक वाद्यों के अनुरूप सुंदर ढंग से गाने लगे। हसन ने
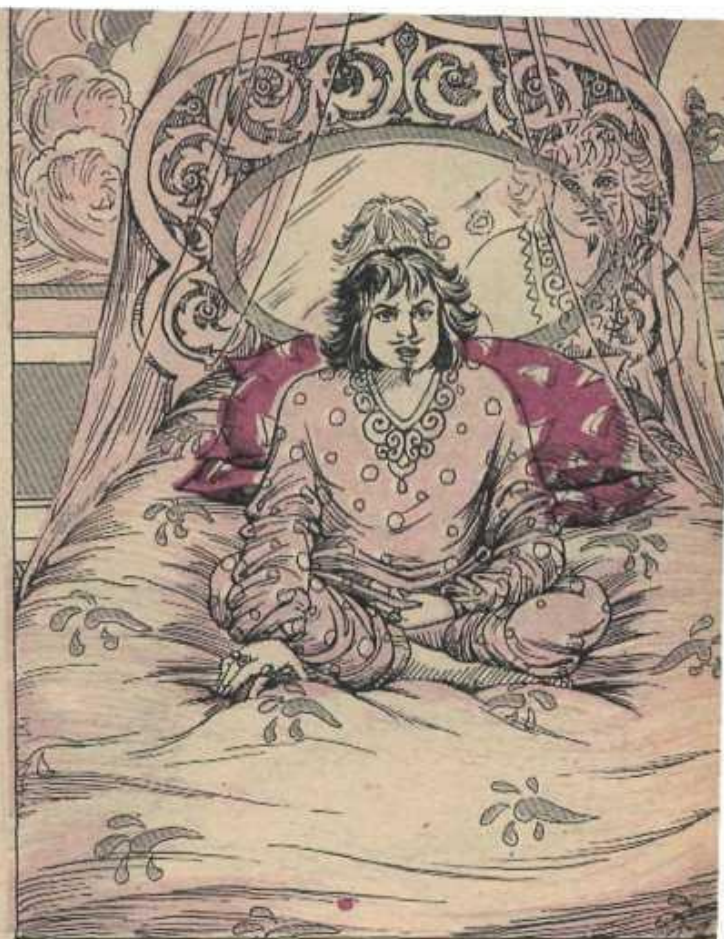
उनकी ओर देख मन में कहने लगा–"अरे हसन! क्या तुमने निद्रा में कभी ऐसा सुंदर गीत सुना है?" यह कहते वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। वह अपनी आँखों पर ख़ुद यक़ीन नहीं कर पा रहा था। उसका दिमाग काम नहीं कर पा रहा था। उसे यह भी मालूम न हो रहा था कि वह वास्तव में सपना तो नहीं देख रहा है!

हसन ने अपने दोनों हाथ फैला कर देखा, दोनों हाथ ज्यों के त्यों थे। वह बोल उठा–"अरे हसन! तुम कहाँ पर हो? क्या यह अचरज की बात नहीं? यह कैसा करतब है? अरे बेटे, तुम कहाँ हो? तुम सोते हो या जागते हो? तुम कितने

दिनों से खलीफ़ा बने हो? यह महल, यह बिस्तर, ये अधिकारी, ये हिजड़े, ये ख़ूबसूरत लड़कियाँ, ये सुंदर गवैये, ये सब कब से तुम्हारी संपति बने हुए हैं?"

उसी वक़्त संगीत बंद हो गया। मनशूर ने आगे बढ़कर हसन के सामने झुक कर तीन बार सलाम किया और बोला– "हुज़ूर! हमारी बिनती है कि सुबह के नमाज़ का वक़्त बीत गया है, अब आपके दरबार में जाने का वक़्त हो गया है!"

हसन कुछ कहना चाहता था। उसकी शंका और बढ़ गयी। उसने मनशूर की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखकर कहा–"अबे तुम कौन हो? मैं कौन हूँ?"

"आप हमारे खलीफ़ा हैं। मुसलमानों के सुलतान खलीफ़ा हारूनल रशीद हैं। अब्बास की संतान में पांचवे आदमी हैं। मैं यह जो आपका बंदा हूँ, आपकी तलवार पकड़ने की इज्ज़त पाया शख्श मनशूर हूँ।" इन शब्दों के साथ मनशूर ने नम्रता के साथ जवाब दिया।

"यह सब झूठ है!" हसन चिल्ला उठा।

"हुज़ूर मेरा इम्तहान लेने के लिए ऐसा कहते हैं। मालिक! आपने कोई बुरा सपना देखा होगा!" मनशूर ने कहा।

अबू अल हसन अपने पर से नियंत्रण खो बैठा, धम्म से बिस्तर पर जा गिरा, पागल की तरह हंसते, पैर पटखते, चादरों को लपेटने लगा। यह सब पर्दों के पीछे से देखनेवाला खलीफ़ा अपनी हंसी को बड़ी मुश्किल से रोक पाया।

थोड़ी देर बाद हसन उठ बैठा, एक काले गुलाम को निकट बुलाकर पूछा–"क्या तुम मुझे जानते हो? मेरा नाम बता सकते हो?"

गुलाम ने सर झुका कर विनयपूवक जवाब दिया–"आप हमारे खलीफ़ा हारूनल रशीद हैं।"

"अरे काले मुँहवाले! यह सब झूठ है, फरेब है! तुम सच नहीं बता रहे हो!" हसन गरज उठा।

इसके बाद उसने एक काली गुलाम औरत की ओर उंगली दिखा कर कहा– "तुम इसे काट लो।" उस औरत ने ज़ोर से उंगली काट ली। हसन पीड़ा से चिल्ला उठा–"मैं सो नहीं रहा हूँ, जाग रहा हूँ! लेकिन ये लोग मेरे बारे में जो कुछ कह रहे हैं, क्या यह सच है?"

उस औरत ने हाथ फैला कर कहा– "अल्लाह हुज़ूर की रक्षा करे! आप तो खलीफ़ा हारूनल रशीद ही हैं।"

"अरे बेटे, क्या तुमने सुना? तुम तो खलीफ़ा ही हो!" हसन चिल्ला पड़ा, फिर उस औरत की ओर मुड़कर बोला– "अरी छिनाल! मैं तुम से यह बात अच्छा जानता हूँ कि मैं कौन हूँ?"

इतने में हिजड़ों का नेता आया और बोला–"हुज़ूर, आपके नहाने का वक़्त हो गया है!" ये शब्द कहते उसने हसन को बिस्तर पर से उतारा। हसन के बिस्तर पर से उतरते ही सब लोग एक साथ चिल्ला उठे–"खलीफ़ा की जय!"

"कैसी अजीब बात है! कल मैं अबू अल हसन था और आज खलीफ़ा हारूनल रशीद जैसे हूँ?" हसन यों सोच ही रहा था कि हिजड़ों के नेता ने उसके

पैरों के पास खड़ाऊँ रखे! ऐसे खड़ाऊँ हसन ने कभी न देखे थे। उनमें नक्काशी की गयी थी और मोती जड़े थे। हसन ने यह सोचते उन खड़ाऊओं में अपने पैर घुसेड़ दिये कि किसीने उसे ये खड़ाऊँ इनाम में दिये हों।

यह सब देखनेवाले लोग बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी को रोक पाये। खलीफ़ा पर्दों के पीछे हंसते-हसते लोट-पोट हो रहा था।

इसके बाद गुलाब जल से हसन को नहलाया गया, राजोचित पोशाकें पहना कर उसके सर पर किरीट रखा गया, तब उसके हाथ सोने का दण्ड दिया गया।

उसने चन्द मिनट तक अपने मन में यह तर्क-वितर्क किया कि वह अबू अल हसन है कि नहीं, फिर ज़ोर से बोल पड़ा–"मैं अबू अल हसन नहीं हूँ, जो मुझे हसन बताता है, उसे मैं फांसी के तख्ते पर चढ़ा दूंगा! मैं मै ही हूँ! मैं हारूनल रशीद हूँ।"

तब वह सबके साथ मिल कर दरबार में गया। मनशूर ने उसे गद्दी पर चढ़ाया और राजदण्ड को उसके घुटनों पर आडे रखा। दरबार में बैठे हुए सब लोगों ने हर्षनाद किया।

हसन ने दरबार में चारों तरफ़ देखा। उसके चालीस दर्वाज़े थे। सभी दर्वाज़ों पर लोगों की भीड़ खचाखच भरी हुई थी। तलवार पकड़े हुए सिपाही, वज़ीर, अमीर, राजदूत आदि सब लोग उसे दिखाई दिये। उस भीड़ में से उसने जफ़र तथा कुछ अन्य राजकर्मचारियों को पहचाना।

जफ़र ने आगे बढ़ कर कागज़ों का एक पुलिंदा निकाला और उस दिन की चर्चा और इन्साफ़ वाले कागज़ात पढ़ कर सुनाने लगा। वे सब हसन की समझ में न आये। फिर भी वह गंभीर हो सुनता रहा और उसने उन पर बड़ी होशियारी से अपना फ़ैसला सुनाया। वहाँ पर भी पर्दों के पीछे रहकर खलीफ़ा सारी बातों पर ध्यान दे रहा था। वह हसन के निर्णयों को देख चकित रह गया।

जफ़र के कागज़ातों के पढ़ना समाप्त होने पर हसन ने कोत्वाल को बुला भेजा।

अहमद उसके सामने आया। उसे अपने पास बुलाकर हसन ने आदेश दिया–" तुम दस सिपाहियों को साथ ले जाकर अमुख मुहल्ले के अमुक घर में रहने वाले आदमी तथा दो अनुचरों को पकड़ लो। वह व्यक्ति उस मुहल्ले का अधिकारी है। उन तीनों की पीठों पर पहले चार सौ कोड़े लगवा दो, इसके बाद उन्हें चिथड़े पहनवा कर एक ऊँट पर पीछे की ओर मुँह करके बिठा दो। उनका बगदाद के सारे मुहल्लों में जुलूस निकालते हुए इस तरह ढिंढोरा पिटवा दो–"दूसरों की इज्जत लूटनेवालों, औरतों का अपमान करनेवालों तथा सज्जनों पर इलज़ाम लगानेवालों को ऐसी ही सजा दी जायगी।" इसके बाद तुम उस अधिकारी को फाँसी के तख़्ते पर चढ़ा दो, उसकी लाश को कंदक में फेंकवा दो। पर उसके अनुचरों को हल्की सज़ा दो।"

अहमद को पहले ही असली खलीफ़ा ने ताकीद की थी कि नये खलीफ़ा के आदेशों का पालन करे। इसलिए हसन को अहमद सलाम करके उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए चला गया।

इसके बाद हसन ने खलीफ़ा की हैसियत से कई फ़ैसले किये। नौकरियाँ दीं। अफसरों को अपने पदों से बर्खास्त किया, राज्य के सभी कार्यों को बड़ी खूबी के साथ पूरा किया। यह सब देख खलीफ़ा बड़ा खुश हुआ।
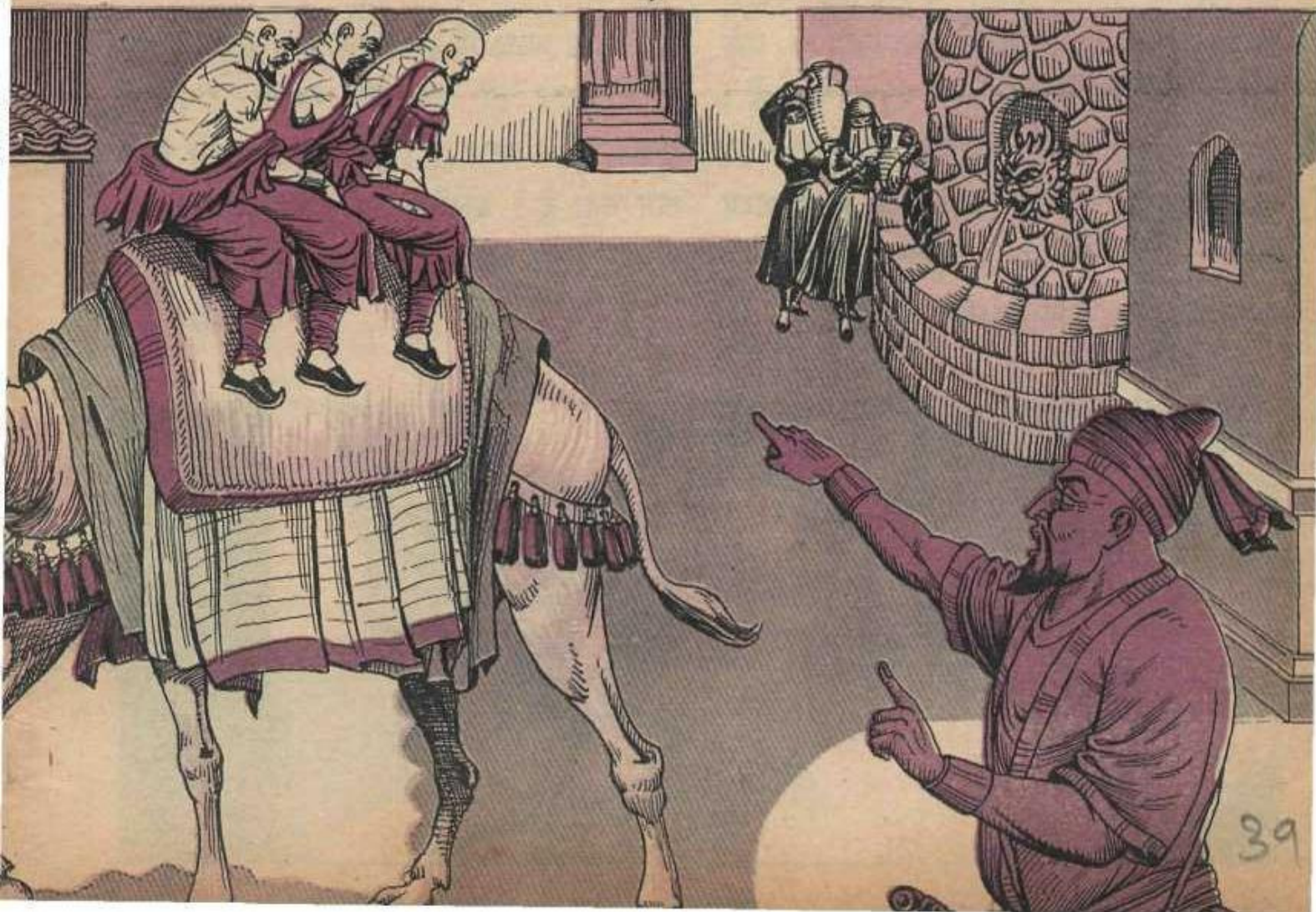
थोड़ी देर बाद अहमद ने लौट कर हसन के हाथ एक कागज़ दिया। उस पर गवाहियों के इस बात के हस्ताक्षर थे कि हसन के आदेशों का अहमद ने पूरा-पूरा पालन किया है।

"अच्छी बात है! आइंदा में झूठे इलज़ाम लगाने वालों, औरतों की इज्ज़त लूटने वालों तथा दूसरों की बातों में अनावश्यक दखल देने वालों को मैं ऐसी ही सजाएँ दूंगा।" हसन ने घोषण की।

इसके बाद खजांची को बुला कर कहा–"तुम एक थैली में एक हज़ार सोने के दीनार ले जाकर अमुक मुहल्ले में अबू अल हसन नामक आदमी के घर जाओ, हसन की माँ को सलाम करो, उससे यह बितनी करो–"खलीफ़ा साहब ने आपको ये एक हज़ार सोने के दीनार इनाम में भेजे हैं। खज़ाना इस वक़्त खाली है, इसलिए इससे ज़्यादा वे भेज नहीं पाये। ये शब्द कहकर तुम मेरे पास लौट आओ और वहाँ का हाल मुझे सुनाओ।"

खजांची हसन की आज्ञा का पालन करने चला गया।

हसन ने जफ़र की ओर इस बात का संकेत किया कि अब दरबार समाप्त हो गया है। जफ़र ने दरबारियों को सूचित किया। सबने गद्दी के सामने झुक कर सलाम किया और चले गये। आखिर हसन के साथ सिर्फ़ जफ़र और मनशूर ही बच रहें। वे उसे गद्दी से उतार कर जनाने में ले गये।

वहाँ पर दस्तरखान बिछा हुआ था। औरतें हसन को घेर कर उसे भोजनालय में ले गयीं। भीतर मधुर संगीत सुनाई दे रहा था। खूबसूरत लड़कियाँ गीत गा रही थीं।

"इस बात में ज़रा भी शक नहीं है कि मैं निश्चय ही हरूनल रशीद हूँ। मैं सुनता हूँ, देखता हूँ। खुशबू का मुझे पता लग रहा है। इसलिए मैं ज़रूर ही खलीफ़ा हूँ।" हसन ने मन में सोचा।

(और है)
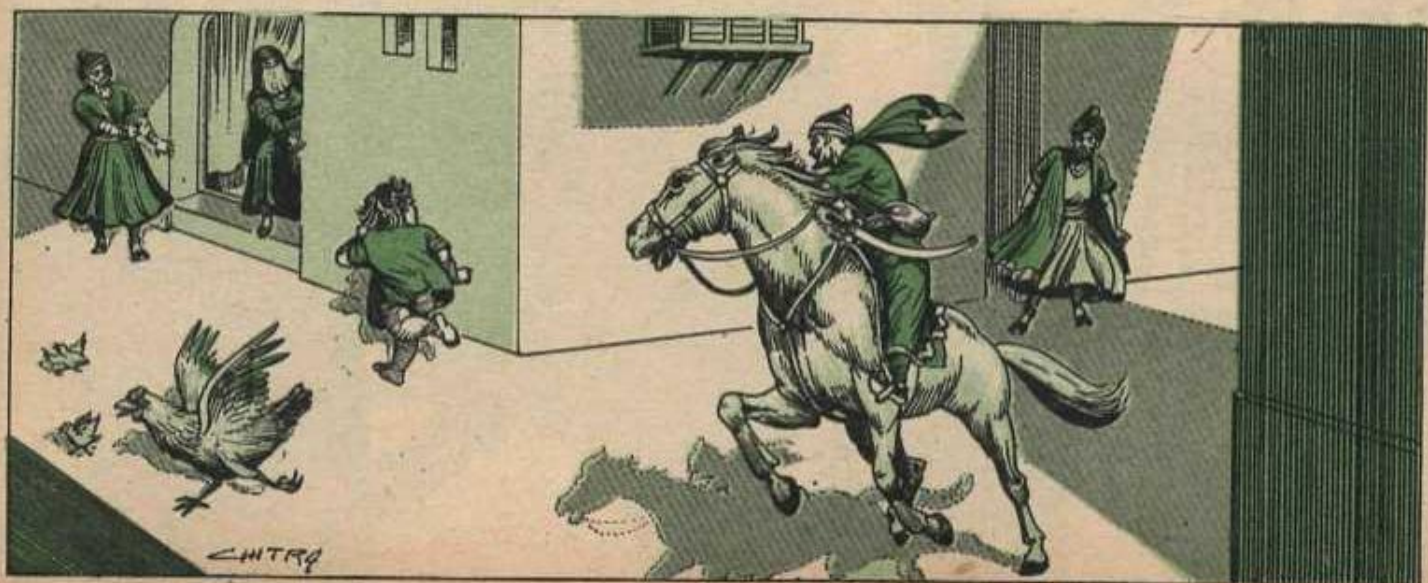
मुखिये की युक्ति

एक बार रामशास्त्री नामक एक पंडित एक राजा के दरबार में गया, अपने पांडित्य का प्रदर्शन करके सोना और चांदी पुरस्कार के रूप में प्राप्त किया। इसके बाद वह बड़ी खुशी के साथ अपने गाँव की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसके भाई का गाँव पड़ता था। इसलिए उसने सोचा कि रात को अपने भाई के घर ठहर कर सुबह अपने गाँव चले जाय।

रामशास्त्री का भाई शिवशास्त्री कोई बड़ा पंडित न था, पर वह बड़ी मुश्किल से अपने परिवार का गुजारा कर पाता था। उसने जब अपने छोटे भाई के हाथ में इतना सारा सोना और चांदी देखा तो उसके मन में अपने भाई के प्रति ईर्ष्या पैदा हो गयी। रात को जब रामशास्त्री सो गया, तब शिवशास्त्री ने अपने भाई के धन की थैली को कहीं छिपा दिया।

दूसरे दिन सवेरे उठकर रामशास्त्री ने देखा, उसकी थैली गायब है। उसने यह बात अपने बड़े भाई से कही।

"अरे, कैसा अन्याय हो गया? चोरों ने हड़प ली होगी! कभी इस घर में ऐसी बात नहीं हुई! कैसी बे-इज्ज़ती की बात है!" शिवशास्त्री एक सांस में कह गया।

रामशास्त्री की समझ में आया कि क्या करे! उसके मन में यह संदेह पैदा हुआ कि उसके भाई ने ही चुरायी होगी। मगर अपने भाई को चोर ठहराना रामशास्त्री को पसंद न था। वह यह सोचकर उस गाँव के मुखिये के पास गया कि वह कोई शायद ऐसा उपाय बतावे जिससे उसके बड़े भाई की इज्ज़त भी बनी रहे और उसका धन भी उसे प्राप्त हो।

गाँव का मुखिया बड़ा बुद्धिमान था। उसने सोच-विचार करके रामशास्त्री को

एक उपाय बताया। रामशास्त्री को वह उपाय बड़ा अच्छा लगा।

थोड़ी देर बाद मुखिये के दो नौकर रामशास्त्री के हाथ बांधकर शिवशास्त्री के घर आये। इसे देख शिवशास्त्री घबरा गया। उसकी समझ में न आया कि उसके छोटे भाई ने कौन सा अपराध किया है। मगर रामशास्त्री ने सर झुका लिया, मानों उसने कोई अपराध किया हो और अपने भाई का चेहरा देखने में शर्माता हो।

मुखिये ने शिवशास्त्री से कहा–"सुनिये, शास्त्री जी, मैं इस बात पर यक़ीन नहीं कर पाता हूँ कि आपके भाई ने भी ऐसा काम किया है। अभी अभी मुझे शहर से ख़बर आयी है कि वहाँ पर आपके भाई ने सोने की चोरी की है। यह भी साबित हो गया है कि वह शहर से सीधे इस गाँव में आये हैं। ये पिछली रात को आपके घर में सोये थे। शायद आपके भाई ने कहीं सोना छिपाया हो, इसलिए आपके घर की मुझे तलाशी लेनी पड़ रही है। इस बात का मुझे दुख भी है, लेकिन क्या करूँ? आपको मुझे मदद देनी होगी।"

इसके बाद रामशास्त्री को अपने साथ ले जाते हुए अपने नौकरों को मुखिये ने वहीं रखा और तलाशी लेने के लिए और आदमियों को भेजने की बात बतायी।

मुखिये के आदमियों के आने के पहले ही शिवशास्त्री ने सोने की वह थैली लाकर उसी जगह रख दी जहाँ पर रात को रामशास्त्री सोया था। मुखिये के आदमियों ने घर की तलाशी ली तो उन्हें वह थैली मिल गयी। थोड़ी देर बाद रामशास्त्री अपनी थैली के साथ भाई के घर आया और बोला–"भाई साहब! मुखिये को तो गलत फ़हमी हो गयी है। यह साबित हुआ है कि मैं निर्दोषी हूँ। वास्तव में राजा ने मुझे यह सोना पुरस्कार के रूप में दिया था। मैं अब अपने गाँव जाता हूँ।" इन शब्दों के साथ अपने बड़े भाई से विदा लेकर अपने गाँव चला गया।

भाई की क़िस्मत

एक गाँव में एक किसान था। उसके पास तीन एकड़ बंजर भूमि थी। उसके राम और सोम नामक दो बेटे थे। राम वक्र बुद्धिवाला था और सोम अक़्लमंद था। किसान ने सोचा कि राम सुस्त है, इसलिए उसे दो एकड़ और सोम को एक एकड़ ज़मीन दी।

बाप ने ज़मीन का जो यह बंटवारा किया, इस पर बेटों में से किसी ने आपत्ति नहीं उठायी। राम को अपने हिस्से से ज़्यादा ज़मीन मिल चुकी थी, इसलिए वह चुप रहा। सोम यह सोचकर चुप रह गया कि पिता ने उसे जो कम ज़मीन दी, इसके पीछे कोई रहस्य होगा।

कुछ दिन बाद किसान मर गया। अब दोनों भाइयों को अपने अपने खेत का काम देखना पड़ा। राम अपनी दो एकड़ ज़मीन की खेती करने की ताक़त नहीं रखता था, यदि छोटे भाई से मदद माँगगे तो उसे भी छोटे भाई की मदद करनी पड़ेगी। यह राम को कतई पसंद न था। इसलिए उसने एक उपाय सोचा।

एक दिन राम ने अपने छोटे भाई सोम से कहा–"भाई, पिताजी ने मुझसे एक बार कहा था कि उन्होंने मुझे जो दो एकड़ ज़मीन दी है, उसमें कहीं धन गाड़ कर रखा है। इसलिए हम दोनों उस खेत को जोतकर वह धन निकल लेंगे और बराबर बाट लेंगे।" इस पर छोटे भाई ने बड़े भाई की बात मान ली। दोनों ने मिलकर उन दो एकड़ ज़मीन को काफ़ी गहरा जोत लिया, मगर उन्हें धन न मिला।

बड़ा भाई जानता था कि खेत में धन नहीं है, इसलिए अपने खेत के जोतने का काम पूरा होते ही वह बोला–"भैया, हमारा दुर्भाग्य था, इसलिए हमें धन नहीं मिला।"

विश्वनाथ वर्मा

"तुमने तो कहा था कि पिताजी ने खेत में धन गाड़ कर रखा है।" छोटे ने बड़े भाई से पूछा।

"चोर ले गये होंगे। अब कर ही क्या सकते हैं?" बड़े ने समझाया।

बड़े भाई को लापरवाही के साथ बोलते देख छोटे को आश्चर्य हुआ और वह बोला– "पिताजी ने शायद मुझे जो जमीन दी, उसमें गाड़ रखा हो, क्या पता? उसे भी जोत कर देख लेंगे।"

दोनों भाई बात कर ही रहे थे, गाँव के मुखिये ने आकर पूछा–"क्या तुम दोनों सामूहिक खेतीबारी कर रहे हो?"

"ऐसी कोई बात नहीं है, जी। मेरे पिताजी ने बड़े भाई से कहा था कि उनके खेत में उन्होंने धन गाड़ कर रखा है, उसे दोनों बराबर बांटना चाहते थे, इसलिए हमने सारा खेत मिल कर जोत लिया। में कहता हूँ कि मेरी भी ज़मीन दोनों मिल कर जोत लेंगे, शायद वह धन मेरी ज़मीन में गाड़ रखा हो।" सोम ने कहा।

"अरे सोम! मुझे वह धन नहीं चाहिये। अपना खेत तुम्हीं जोत लो, अगर उसमें धन मिले तो तुम्हीं रख लो।" राम ने कहा।

इस पर मुखिया ने राम की होशियारी को भांप लिया और उसकी अक्लमंदी पर हँस कर चला गया।

सोम अपना खेत जोत रहा था, उसके हल के फाल से कोई चीज़ टकरा गयी। सोम ने कुदाल से खोद कर एक लकड़ी की पेटी बाहर निकाली। उसे खोल कर देखा, उसमें सोने के गहने भरे पड़े थे।

गहनों को देख राम का चेहरा पीला पड़ गया। वह सोचने लगा कि अगर उसने सोम की थोड़ी-सी मदद की होती तो, उसे भी उन गहनों में आधा हिस्सा मिल जाता।

सोम ने उन गहनों में से चार बढ़िया गहने निकाल कर अपने बड़े भाई को दिये। उसकी यह उदारता देख गाँव वालों ने सोम की तारीफ़ की।

अज्ञात पंडित

चीन देश में यह रिवाज़ था कि यदि कोई विद्वान सरकारी नौकरी प्राप्त करना चाहे तो उसे परीक्षा देकर उत्तीर्ण होना पड़ता था। आज से सत्रह शताब्दियों के पहले एक देहाती पंडित जिसका नाम पावो स्वान था, परीक्षा देने के लिए राजधानी की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक और युवक पंडित से उसकी मुलाक़ात हुई।

वह युवक दिल की धड़कन की बीमारी से परेशान था, इसलिए पावो स्वान ने उसकी मदद करनी चाही, मगर दिल की धड़कन से वह पंडित मर गया।

पावो उस मृत युवक का नाम नहीं जानता था। उसके पास दस चांदी के सिक्के और रचनाओं का एक पुलिंदा प्राप्त हुआ। पावो ने कागज़ों के उस पुलिंदे को शव पर ओढ़ा दिया और एक चांदी का सिक्का खर्च करके शव की अत्येंष्ठि क्रियाएँ कीं। शव के सरहाने बाक़ी नौ सिक्के रख दिये और शव पेटिका के साथ शव को ज़मीन में गाड़ दिया।

उस विद्वान के प्रति पावो ने दुख प्रकट किया और वह ये शब्द कहकर अपने रास्ते चला गया–"तुम तो मरे हुए हो, फिर भी तुमसे बन सके तो तुम अपने घरवालों को अपनी खबर दो। मैं ज़रूरी काम से जा रहा हूँ, इससे बढ़ कर मैं तुम्हारी कुछ और मदद नहीं कर सकता।"

पावो राजधानी नगर में पहुँचा। वहाँ पर परीक्षाएँ देकर वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ, इसलिए उसका नाम दूर तक फैल गया।

पावो जब राजधानी में था, तब एक विचित्र घटना घटी। कोई एक घोड़ा पावो के पास आ पहुँचा। वह पावो को

छोड़ता न था। इसलिए लाचार होकर पावो ने उस घोड़े को अपना बना लिया।

पावो जब राजधानी से घर लौट रहा था, तब अंधेरा फैलने को था। उसने एक अमीर के महल को देखा तो सोचा कि रात को उस घर में विश्राम करके सुबह यात्रा करना उचित होगा। वह घोड़े से उतर पड़ा और अपने नाम वाला एक कागज़ नौकर के हाथ देकर कहा–"साहब से कह दो कि मैं उनके दर्शन करना चाहता हूँ।"

नौकर भीतर जाकर अपने मालिक के हाथ कागज़ का वह टुकड़ा देते हुए बोला–"हुजूर, इस चिट देने वाले व्यक्ति ने हमारे घोड़े को हड़प लिया है।"

मालिक ने कागज़ पर "पावो स्वान" नाम देखा और नौकर से कहा–"ये तो नामी पंडित हैं। इसमें कोई विशेष समाचार होगा, तुम उन्हें भीतर बुला लाओ।" पावो जब भीतर पहुँचा, तब मालिक ने उससे पूछा–"मैं इस घोड़े को पिछले साल खो बैठा हूँ। आपके हाथ कैसे लग गया?"

"मैं जब राजधानी नगर जा रहा था, तब रास्ते में मुझे एक पंडित मिला। वह दिल की धड़कन की बीमारी से मर गया।" इन शब्दों के साथ पावो ने उस घर के मालिक को अपना सारा वृत्तांत सुनाया।

घर का मालिक चकित हो बोला–"तब तो वह मेरा ही पुत्र होगा।"

दूसरे दिन सवेरे वह पावो को साथ लेकर उस जगह पहुँचा जहाँ उसका पुत्र गाड़ा गया था। वहाँ की ज़मीन खोद कर शव पेटिका को बाहर निकला तो मालिक को विश्वास हो गया कि वह शव उसीके पुत्र का है।

पावो ने अपने पुत्र के प्रति जो सहनुभूति दिखाई दी, उस पर बहुत ही प्रसन्न होकर वह अमीर राजा के दरबार में गया। पावो की सिफ़ारिश की। पावो एक ऊँचे ओहदे पर नियुक्त किया गया। न्यायधिकारी के रूप में उसने अच्छी ख्याति प्राप्त की।

कलियुग

एक समय था, जब उज्जयिनी नगर में एक ब्राह्मण तथा एक वैश्य के बीच गाढ़ी मैत्री थी। एक दिन ब्राह्मण ने काशी की यात्रा करने का निश्चय किया, अपना एक क़ीमती हीरा वैश्य के हाथ देते हुए बोला–"दोस्त! इस हीरे को तुम अपने पास रख लो। काशी से लौटने पर मुझे इसे बेचकर सब को दावत देनी है।" यों समझा कर ब्राह्मण काशी चला गया।

ब्राह्मण बड़ी मुश्किल से काशी पहुँचा। वहाँ पर विश्वेश्वर के दर्शन करके दो साल बाद अपने गाँव लौटा।

दूसरे दिन सवेरे ब्राह्मण ने अपने मित्र के घर जाकर अपना हीरा वापस माँगा।

वैश्य ने भोले बनकर ऐसा अभिगय किया, मानों वह रत्न की बात बिलकुल न जानता हो! वह बोला–" कैसा हीरा भाई? तुमने मुझे दिया ही कब?"

ब्राह्मण को बड़ा गुस्सा आया। वह अपने मित्र को साथ लेकर राजा के दरबार में गया।

वैश्य ने राजा से कहा–" महाराज, यह गरीब झूठ बोलता है कि इसने मेरे यहाँ अपना हीरा दिया!"

राजा ने ब्राह्मण से पूछा–"तुम शपथ करो कि तुमने इस वैश्य के हाथ हीरा दिया है।" तुरंत ब्राह्मण ने अपने साथ आये पुत्र के सर पर हाथ रखकर शपथ की–"मैंने सचमुच इस वैश्य के हाथ एक हीरा दिया है।"

ब्राह्मण के मुँह से इन शब्दों के निकलने की देरी थी कि ब्राह्मण का पुत्र मर गया।

इसे देख राजा ने ब्राह्मण से कहा–"हे दुष्ट ब्राह्मण! तुम झूठमूठ शपथ करके इस वैश्य के हाथ से एक हीरा हड़पना चाहते हो? इसीलिए तुम्हारा पुत्र मर गया है।

श्रीमती कुंकुम गोयंका

तुम्हारे लिए यही सजा है। जाओ, यहाँ से चले जाओ।"

ब्राह्मण को अपार दुख हुआ। उसने सच्ची बात बतायी थी, लेकिन उसका पुत्र मर गया है, वह दुखी होता हुआ अपने पुत्र की लाश को लेकर श्मशान में गया।

इन सारी बातों को देखनेवाला धर्मदेवता एक वृद्ध के रूप में ब्राह्मण के पास आकर बोला–"बेटा, तुम दुखी क्यों हो? यह लड़का कैसे मर गया है?" ब्राह्मण ने वृद्ध को सारा हाल कह सुनाया।

"पगले ब्राह्मण! जिस वक़्त तुम काशी की यात्रा समाप्त कर रहे थे तब कलियुग का प्रवेश हुआ है। इस वक़्त धर्म एक पैर पर चल रहा है। इसलिए तुम सत्य बताकर धोखा खा गये हो। तुम फिर राजा के पास जाकर झूठ बोलो और तुम्हारे पुत्र पर ही शपथ करो, तब तुम्हारे प्रति न्याय होगा।" वृद्ध ने ब्राह्मण को समझाया।

ब्राह्मण ने वृद्ध से जान लिया कि असत्य शपथ कैसे करनी है, तब वह अपने पुत्र की लाश लेकर राजा के पास लौट आया और बोला–"महाराज! मैं पहले झूठ बोलकर अपने पुत्र को खो बैठा हूँ। मैंने इस वैश्य के यहाँ एक नहीं, दो हीरे छिपाये थे, मैं यह बात अपने पुत्र के सर पर हाथ रख कर शपथ ले रहा हूँ।"

ब्राह्मण के इस तरह शपथ लेने की देरी थी कि उसका पुत्र जी उठा।

राजा को ब्राह्मण की शपथ पर विश्वास जम गया। उसने वैश्य को बुला भेजा और कहा–"दुष्ट! ब्राह्मण ने तुम्हारे पास जो दो हीरे छिपाये थे, उन्हें वापस कर दो।"

वैश्य सर पीटते हुए बोला–"महाराज, इसने मेरे हाथ एक ही हीरा दिया था।"

इस पर ब्राह्मण ने राजा को सारा वृत्तांत सुनाया और वैश्य के हाथ से अपना हीरा वापस ले लिया। राजा ने भी ब्राह्मण को पुरस्कार देकर भेजा और वैश्य को कारागार की सजा दी।

नारी के गुलाम

एक बार राजा ने दरबार में चर्चा के सिलसिले में यह बताया कि नारी का जन्म ही ख़राब है। क्योंकि नारियाँ तो हमेशा अपने पतियों के आदेशों को सर आँखों पर लेती हैं। वे उनके विरुद्ध कुछ बोल ही नहीं पातीं। लेकिन मंत्री ने इसका विरोध करते हुए कहा–"महाराज, इस दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो नारी का गुलाम न हो।"

इस बात की सचाई जानने की राजा के मन में इच्छा पैदा हुई। उसने सभी दरबारियों को आदेश दिया कि कल की सभा में सब लोग अपनी अपनी पत्नियों के साथ आवे। फिर क्या था, दूसरे दिन सभी दरबारी अपनी पत्नयों को साथ ले आ पहुँचे।

"आपमें से जो व्यक्ति अपनी पत्नी का गुलाम न हो, वे हाथ उठावे।" राजा ने कहा।

किसी ने भी हाथ न उठाया। मंत्री का चेहरा खिल उठा।

इतने में एक व्यक्ति ने अपना हाथ उठाया। राजा ने प्रसन्न होकर पूछा–"तुम अपनी पत्नी की बात नहीं मानते हो न?"

"महाराज! मेरी पत्नी ने ही हाथ उठाने को कहा है।" दरबारी ने कहा।
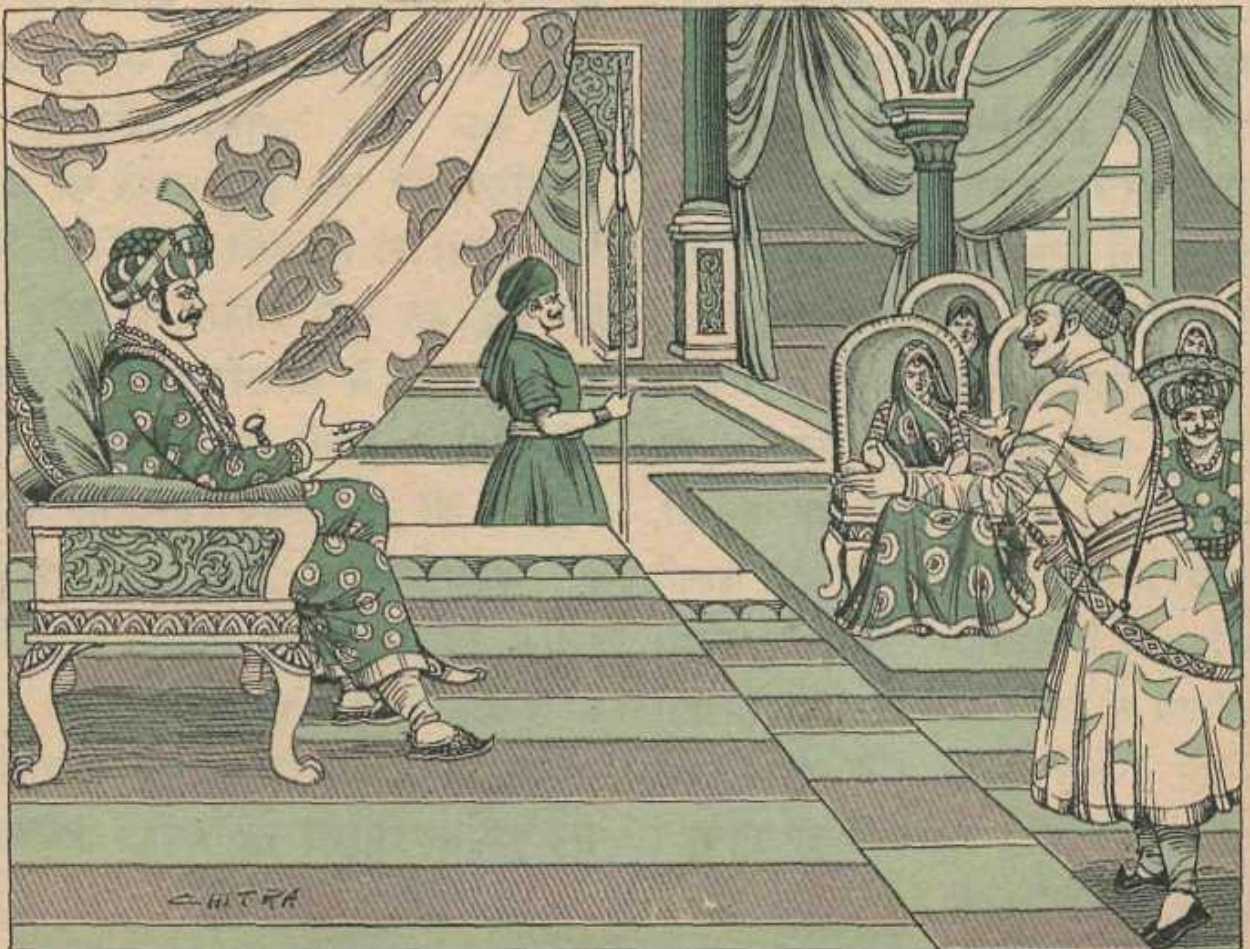
अमृत

द्वापर युग में उत्तर कुरुभूमि में भृंगीरस नामक एक साधारण गृहस्थ था। उसके मन में यह इच्छा पैदा हुई कि अमृत को प्राप्त करके मृत्यु से बचे रहे।

इस इच्छा की पूर्ति के लिए भृंगीरस गंधमादन पर्वत पर चला गया, जहाँ देवगण घूमा करते थे। वहाँ पर भृंगीरस का सिद्धों के साथ परिचय प्राप्त हुआ।

भृंगीरस ने उन लोगों से पूछा–"क्या अमृत प्राप्त करने का कोई उपाय है?"

"इसके लिए तपस्या करने के सिवाय दूसरा कोई मार्ग नहीं है। हो सकता है कि तपस्या के द्वारा भी अमृत की प्राप्ति न हो, तुम चाहो तो हम जो सिद्ध विद्याएँ जानते हैं, उन्हें तुम्हें सिखायेंगे।" सिद्धों ने कहा।

भृंगीरस ने उनके यहाँ से सिद्ध विद्याएँ सीख लीं। तब देवताओं के घूमने वाले उस प्रदेश को छोड़ जंगल में जा पहुँचा। वहाँ पर उसने तपस्या करनी चाही, मगर तपस्या चली नहीं।

जंगल के गाँवों में रहने वालों को मालूम हो गया कि भृंगीरस वैद्य विद्या में निपुण है, इसलिए वे लोग भृंगीरस के पास आने लगे। भृंगीरस किसी को भी औषध नहीं देता था। उसकी दृष्टि में कुछ बीमारियों की जड़ बुरी आदतें थीं। वह कहा करता था कि ऐसी बीमारियाँ जिन्हें हैं, उन्हें उन बुरी आदतों को छोड़ देना चाहिये, वरना वे बीमारियाँ दूर न होंगी। कई लोगों ने अपनी बुरी आदतों तथा बुरे विचारों को त्याग कर चिकित्सा पायी। कुछ बीमारियों का उसने प्राणायाम द्वारा इलाज किया तो कुछ पुरानी बीमारियों का योगासनों द्वारा इलाज किया।

इस प्रकार भृंगीरस का यश जंगलों को पार कर नगरों तक फैल गया। लाखों की

राजकुमार भुवालका

संख्या में लोग उसके यहाँ आने लगे। उसके चारों ओर एक बड़ा समाज ही बन गया। उसके वास्ते भृंगीरस ने घर बनवाये, सड़कें बनवायीं और उनके लिए आवश्यक शासन का भी प्रबंध किया।

धीरे-धीरे भृंगीरस को शासन के साथ जनता की सुविधाएँ, क़ानून, न्याय-निर्णय, धर्म-सूत्र इत्यादि की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी पड़ी। अंत में उसे मालूम हुआ, यदि वह इस दल दल से बाहर न निकले तो अमृत पाने का उसका प्रयत्न संभव न होगा। इसलिए उसने उपर्युक्त सभी कार्य देखने के लिए कुछ समर्थ व्यक्तियों को तैयार किया, कुछ शिष्यों को सिद्ध विद्याओं की जानकारी करायी और एक दिन की रात को अपने द्वारा स्थापित भृंगीपुर से चला गया। उसके साथ सिर्फ़ चार मुख्य शिष्यों को ले गया।

भृंगीरस के चले जाने के बाद उसके बारे में भृंगीपुर के निवासियों ने तरह तरह की कथाएँ प्रचलित कीं। कुछ लोग यहाँ तक कहने लगे कि भृंगीरस साक्षात् ईश्वर हैं, पर वे जनता का उद्धार करने के लिए मुनि के रूप में अवतरित हुए, अपने कार्य के समाप्त होते ही अंतर्धान हो गये हैं। इसके बाद भृंगीरस के लिए एक मंदिर का निर्माण करके उसकी पूजा करने लगे।
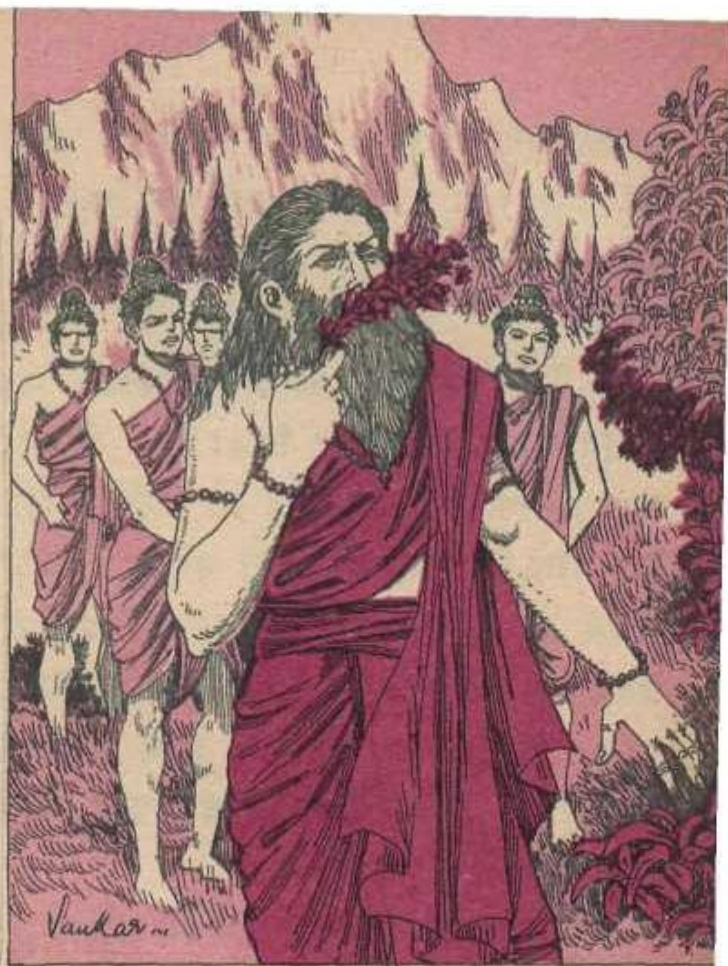
इस बीच भृंगीरस ने अपने चार शिष्यों के साथ हिमालयों में जाकर तपस्या शुरू की। उसके शिष्य भी उसके कहे मुताबिक़ तपस्या करने लगे थे। वे पर्वतों तथा घाटियों में घूम कर भृंगीरस की दिखाई गयी जड़ी-बूटियाँ लाते थे। भृंगीरस ने तपस्या के द्वारा जो शक्ति प्राप्त की, उसके द्वारा वह अपने लिए उपयोगी जड़ी-बूटियों का पता लगा लेते थे।

इस तरह अनेक वर्षों तक तपस्या, साधना तथा परिश्रम करने के बाद भृंगीरस ने अमृत प्राप्त किया। पर उसे लगा कि उसके चारों शिष्य शायद अमृत का सेवन करने योग्य नहीं हैं। इसलिए उसने

उनकी एक परीक्षा लेनी चाही। उसने जो अमृत तैयार किया, उसे एक मिट्टी के बर्तन में अपने सामने रख कर अपने चारों शिष्यों को आगे बिठाया और उनसे कहा–"मैंने अपनी सारी शक्तियों का प्रयोग करके इसे तैयार किया है। मैं नहीं जानता कि यह अमृत है या नहीं। पर इसे पीने के बाद ही पता चलेगा। यदि भाग्य ने हमारा साथ दिया तो हमारा प्रयत्न सफल हो यह अमृत बन जायगा, वरना नहीं।" इन शब्दों के साथ भृंगीरस ने मिट्टी के बर्तन में स्थित द्रवपदार्थ पिया और नीचे गिर पड़ा।

इसे देख चारों शिष्य आश्चर्य चकित हो गये। एक-दो शिष्यों ने कहा–"गुरुजी ने अमृत के बदले हालाहल प्राप्त किया है।"

पर कृणु नामक शिष्य ने कहा–"हमारे गुरुजी तो बड़े ही तपस्वी हैं। वे बिना मतलब के इसे पिये नहीं होंगे।" इन शब्दों के साथ उसने भी थोड़ा द्रव पिया और वह भी धम्म् से नीचे गिर पड़ा।

"इसे पीकर अभी मर जाने के बदले कुछ साल और जीकर सबकी भांति मरना ज़्यादा उत्तम होगा।" यह सोचकर बाक़ी तीनों शिष्य वहाँ से चले गये।

उनके जाते ही भृंगीरस ने कृणु से कहा–"बेटा, हम दोनों ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। मैं इस पृथ्वी पर बहुत समय तक जीवित रहा। मुझे अपने शरीर के साथ स्वर्ग जाने की शक्ति प्राप्त हो गयी है। मैं स्वर्ग में चला जाऊँगा। तुम्हारी उम्र बहुत ही कम है। इसलिए तुम इस दुनिया में तब तक जीवित रहो जब तक तुम इस जीवन से ऊब न जाओगे, जब तुम ऊब जाओगे तब मेरे जैसे तुम अपने शरीर के साथ स्वर्ग में आ जाओ।" ये शब्द कहकर भृंगीरस आसमान में उड़ कर चला गया।

कृणु इसके बाद कई हज़ारों साल तक चिरंजीवी बन कर रहा, मानव समाज में घूम कर आख़िर वह भी एक दिन शरीर के साथ स्वर्ग में चला गया।

तरकारी का स्वाद

एक गाँव में एक जमीन्दार था। उसी गाँव में गोकुल दास नामक एक अनाथ बालक था। वह स्वभाव का बड़ा अच्छा लडका था और अक़्लमंद भी था। इसलिए जमीन्दार उस लड़के से स्नेह करता था। उसने लड़के को थोड़ी-सी ज़मीन दी, वहीं पर एक घर बनाकर दिया और कहा–"तुम मेरे इस खेत का काम करो और तुम्हें जो भी खाने-पीने की चीजें चाहिये, मेरे यहाँ से लेते जाओ।"

मगर गोकुल जमीन्दार के यहाँ से सिर्फ़ बाजरे का आटा ले जाता था और बाजरे की रोटी खा लेता था। धीरे-धीरे जमीन्दार को यह बात मालूम हो गयी। उसने सोचा कि गोकुल अपने लिए आवश्यक तरकारियाँ शायद खेत में पैदा करता होगा।

एक दिन जमीन्दार शिकार खेलने जाते हुए गोकुल की झोंपड़ी के भीतर चला गया। उस वक़्त गोकुल को सिर्फ़ बाजरे की रोटी खाते जमीन्दार ने देखा।

"गोकुल, तुम तरकारी के बिना यह रोटी कैसे खाते हो?" जमीन्दार ने पूछा।

गोकुल ने हँस कर जवाब दिया–"सरकार, मुझे सिर्फ़ यह रोटी काफ़ी है। मुझे तरकारी खाने की आदत नहीं है।"

"तुम एक दिन मेरे घर आ जाओ, तुम्हें सभी तरकारियों का स्वाद दिखलाऊँगा।" जमीन्दार ने कहा।

"हुजूर! मुझे खेत के काम से फ़ुरसत नहीं मिलती, मौक़ा मिलने पर ज़रूर आ जाऊँगा।" गोकुल ने जवाब दिया।

उन्हीं दिनों में जमीन्दार के गाँव में एक मेला पड़ा। उस दिन जमीन्दार ने सबको दावत दी। उस मेले में गोकुल नहीं गया। जमीन्दार गोकुल को बुलाने चला गया। जमीन्दार के आ जाने से

गोकुल को उनके साथ दावत में जाना पड़ा।

जब वे दावत के पंडालों में पहुँचे, तब तक सब लोग खाना समाप्त कर चले जा रहे थे। पत्तल उठाये जा रहे थे।

"आज तुम तरकारियों का स्वाद देखोगे। हम दोनों साथ बैठ कर खाना खायेंगे।" जमीन्दार ने कहा।

"साहब, तरकारियों के खाने की क्या ज़रूरत है, उन्हें देखते ही तरकारियों का स्वाद मालूम हो जाता है।" गोकुल ने जवाब दिया।

जमीन्दार ने अचरज में आकर पूछा- "ओह, ऐसी बात है? तब तो बताओ, आज जो तरकारियाँ बनी हैं, उसमें किसका स्वाद बढ़िया है?"

"मैं उसका नाम तो नहीं जानता, पर आप मेरे साथ रसोई घर में आ जाइये। मैं सबसे ज़्यादा रुचिकर तरकारी दिखाऊँगा।" गोकुल ने कहा। इस पर दोनों रसोई घर में पहुँचे। गोकुल ने जमीन्दार को तरकारी दिखा कर कहा- "सबसे ज़्यादा स्वादिष्ट तरकारी यही है।"

जमीन्दार ने हँस कर कहा-"पगले, बैंगन वगैरह तरकारियों के होते यह स्वादिष्ट कैसे हो सकती है? बिना खाये तुम्हें उसका स्वाद ही कैसे मालूम होगा?" इसके बाद रसोइयों ने जमीन्दार तथा गोकुल को खाना परोसा। जमीन्दार ने बैंगन का स्वाद देख उसे फेंक दिया। वह बहुत ही ख़राब बनी थी। गोकुल की बात सच निकली। तुरई की तरकारी बड़ी अच्छी बनी थी।

"गोकुल, तुमने तरकारी को देख उसका स्वाद कैसे बताया?" जमीन्दार ने पूछा।

गोकुल ने हँस कर उत्तर दिया- "सरकार, यह कौन-सी बड़ी हुनर है? जितने भी पत्तल उठाये गये, सब में बैंगन की तरकारी भरी पड़ी थी। तुरई की तरकारी को किसीने छोड़ा तक नहीं।"

जमीन्दार गोकुल की बुद्धि-कुशलता पर प्रसन्न हुआ और उसे अपने कचहरी में नौकरी देकर अपने ही पास रखा।

अर्जुन ने थोड़ी दूर आगे बढ़कर कौरव-सेना पर बाणों की वर्षा की, तब शंखनाद किया। उस ध्वनि को सुनकर गायें मुँह बाये पीछे की ओर दौड़ने लगीं। अर्जुन को लगा कि वह जिस काम के लिए आया था, वह तो समाप्त हो गया है। मगर जब वह दुर्योधन पर हमला करने जा रहा था, तब सभी कौरव वीरों ने उसका सामना किया। अर्जुन ने उनमें कर्ण को भी देखा, तब उसने उत्तर को आदेश दिया कि वह कर्ण की ओर रथ बढ़ावे।

कर्ण के अनुचरों ने अर्जुन के साथ युद्ध प्रारंभ किया। अर्जुन ने उन सबको हराया और कुछ लोगों का वध भी किया। युद्ध ज़ोर पकड़ने लगा। अर्जुन के हाथों में कर्ण का छोटा भाई भी मर गया था। इसे देख कर्ण अत्यंत क्रोध के साथ अर्जुन के सामने आया। अर्जुन भी यही चाहता था। उन दोनों के बीच जब द्वन्द्व युद्ध होने लगा, तब सब लोग आश्चर्य के साथ देखते ही रह गये। कर्ण उस युद्ध में बुरी तरह से घायल हो पीछे हट गया। कौरवों ने अर्जुन की युद्ध-कुशलता के साथ उत्तर के रथ-संचालन की भी तारीफ़ की।

कर्ण के पीछे हटते ही सभी कौरव योद्धा अर्जुन से जूझ पड़े। इस पर अर्जुन ने कृपाचार्य को लक्ष्य करके उस ओर रथ बढ़ाने का उत्तर को आदेश दिया।

अर्जुन का रथ कृपाचार्य के रथ की प्रदक्षिणा करके सामने आ खड़ा हुआ। उस भयंकर युद्ध में कृपाचार्य हार गया।

कृपाचार्य के पीछे हटते ही द्रोणाचार्य अर्जुन के साथ युद्ध करने के लिए आगे आया। तब अर्जुन ने द्रोणाचार्य को प्रणाम करके कहा–"गुरुदेव, वनवास के समय हम लोगों ने अनेक कष्ट झेले हैं। आप कृपया हम पर नाराज़ न होइये। जब तक आप मुझ पर बाण का प्रयोग न करेंगे तब तक मैं आपके साथ युद्ध नहीं करूँगा।"

द्रोणाचार्य ने पहले अर्जुन पर बाण का प्रयोग किया, इसके बाद दोनों ने भयंकर युद्ध किया। वास्तव में कौरव सेना में द्रोणाचार्य की समता कर सकनेवाला कोई नहीं है। अर्जुन ने द्रोण पर बाणों की वर्षा कर दी, इस पर कौरवों में हाहाकार मच गया।

इसे देख द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने अर्जुन पर बाण चलाया। अर्जुन ने द्रोणाचार्य को छोड़ अपने रथ को अश्वत्थामा की ओर बढ़ा दिया। अश्वत्थामा ने अर्जुन को बड़ी देर तक सताया, मगर विजय अर्जुन के हाथ लगी।

इस प्रकार अर्जुन ने रोष में आकर एक बार और कर्ण, दुश्शासन तथा अन्य कौरव योद्धाओं के साथ युद्ध किया। वे सब योद्धा घबरा कर भागने लगे, तब भीष्म पितामह अर्जुन के साथ युद्ध करने के लिए आगे आये।

दोनों ने परस्पर अस्त्रों का प्रयोग किया। आखिर भीष्म पितामह अपने रथ में बेहोश होकर गिर पड़े। उनका सारथी रथ को दूर हांक ले गया।

इस दृश्य को देख दुर्योधन ने अर्जुन पर हमला किया। दोनों के बीच घन घोर युद्ध हुआ। अर्जुन ने दुर्योधन की छाती में बाण का प्रयोग किया। फिर क्या था, घबरा कर दुर्योधन अपने रथ के साथ भाग खड़ा हुआ। दुर्योधन को भागते देख अर्जुन ने उसका परिहास किया।

दुर्योधन का रोष जाग उठा, पुनः वह अर्जुन की ओर बढ़ा। उसके साथ अन्य कौरव योद्धा भी आ पहुँचे। अर्जुन ने उन सब के साथ युद्ध करते हुए सम्मोहन अस्त्र का प्रयोग किया, इस पर सभी योद्धा बेहोश हो गये और उनके हाथों से अस्त्र खिसक गये।

इस पर अर्जुन ने उत्तर से कहा– "उत्तर, तुम रथ को रोक उन योद्धाओं की पगड़ियों को उतार लाओ। उत्तरा ने रंग-बिरंगी वस्त्र लाने को कहा है। उन पगड़ियों में से सफ़ेद पगड़ी कृपाचार्य की है, कर्ण की पगड़ी पीली है, दुर्योधन तथा अश्वत्थामा की पगड़ियाँ नीले रंग की हैं, याद रखो, मेरे अस्त्र का प्रभाव भीष्म पितामह पर न होगा, अतः तुम उनकी पगड़ी न लाना!"

उत्तर शीघ्र सब की पगड़ियाँ उतार लाया और रथ पर सवार हो गया। इसके बाद वह रथ को कौरव सेनाओं के बीच ले गया। तब भीष्म पितामह ने अपने बाणों के द्वारा अर्जुन को रोका। अर्जुन ने भीष्म के रथ के घोड़ों को मार डाला और युद्ध किये बिना आगे बढ़ा।

इतने में दुर्योधन होश में आया, उसने देखा कि अर्जुन ठाठ से कौरव सेना के बीच से गुज़र रहा है, तब

दुर्योधन चिल्ला उठा–"आप लोग अर्जुन को बेफ़िक्र जाते देख चुप क्यों हैं? उसे मार डालिये।"

इसके उत्तर में भीष्म ने समझाया– "तुम्हारी अक़्ल कहाँ चरने गयी? सब लोग अपने अस्त्रों को छोड़ बेहोश पड़े थे, अर्जुन चाहता तो सबको मार सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह सब की पगड़ियाँ मात्र ले गया है। तुम अपनी हार मान लो और अर्जुन को गायों को वापस ले जाने दो।"

भीष्म के कथनानुसार कौरवों ने अपनी हार मान ली। उनके वापस लौटते देख अर्जुन बड़ा प्रसन्न हुआ और भीष्म

उनसे बता दो कि तुम्हीं ने कौरवों को युद्ध में पराजित किया है।"

"हे महानुभाव! आपने युद्ध का जो कौशल दिखाया, वह अपूर्व है। ऐसा युद्ध मैं कहाँ कर सकता हूँ? फिर भी पुन: आपके आदेश के मिलने तक इस बात को मैं गुप्त रखूँगा और पिताजी से कहूँगा कि मैंने ही युद्ध में विजय प्राप्त की है।" उत्तर ने जवाब दिया।

"हम थोड़ा विश्राम करके घोड़ों को पानी पिला कर दुपहर तक नगर में पहुँच जायेंगे। इस बीच में तुम्हारे गोपालक राजधानी में जाकर महाराज को यह सूचना दे कि तुम्हारी विजय हो गयी है।" अर्जुन ने कहा।

पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा तथा अन्य कुरुवीरों पर प्रणाम सूचक बाण छोड़े तथा अंत में एक बाण के द्वारा दुर्योधन के किरीट को उड़ा दिया। तब अर्जुन ने उत्तर से कहा-"हमने शत्रु को पराजित कर गोगणों की रक्षा की, अब ख़ुशी के साथ घर चलो।"

रथ जाकर शमीवृक्ष के पास रुक गया। पांडवों के सभी अस्त्र पुन: पेड़ पर सुरक्षित रखे गये। अर्जुन फिर सारथी के आसन पर बैठकर बोला-"तुम्हारे पिता को यह मालूम हो जाय कि पांडव आज तक उनके दरबार में आश्रय ले रहे थे, वे भय के मारे घबरा उठेंगे। इसलिए तुम

तब तक राजा विराट सुशर्मा को हराकर नगर में लौटकर दरबार में बैठा हुआ था। प्रतिष्ठित नागरिक तथा ब्राह्मण राजा की विजय का अभिनंदन कर रहे थे।

उस समय राजा विराट ने पूछा-"राजकुमार उत्तर कहाँ?" इस पर अंत:पुर की स्त्रियों ने राजा को सूचित किया कि कौरवों की सेनाओं ने विराट की गायों को पकड़ लिया तो उन्हें छुड़ाने के लिए उत्तर बृहन्नला को सारथी बनाकर युद्ध भूमि में गये हैं।

यह समाचार सुनते ही राजा विराट घबरा कर अपने मंत्रियों से बोला-

"सुशर्मा के साथ युद्ध करनेवाले बाक़ी सभी योद्धाओं को उत्तर की सहायता के लिए भेज दीजिये, पहले इस बात का पता लगाइये कि नपुंसक को सारथी बनानेवाला उत्तर ज़िंदा है या नहीं।"

विराट को घबराते देख युधिष्ठिर ने मंदहास करते हुए कहा–"महाराज, बृहन्नला के सारथी रहते आपका पुत्र ज़रूर विजयी होगा। कौरव-सेना की क्या बात है, देवता तथा असुरों की सेनाएँ भी आ जाये तो भी पराजय न होगी।"

इसी समय राजा विराट को समाचार मिला कि उत्तर शत्रुओं को पराजित कर गायों को छुड़ाकर राजधानी में लौट रहा है। यह समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने फिर कहा–"उत्तर का विजयी होकर लौटना तो शुभ समाचार ही है, पर बृहन्नला के सारथी रहते उत्तर के विजयी होने में मुझे आश्चर्य नहीं हो रहा है।"

अपने पुत्र के विजयी होने का समाचार सुनकर यह संदेशा लानेवालों को राजा ने उत्तम वस्त्र ओढ़कर उनका सम्मान किया और मंत्रियों को आदेश दिया कि तुरंत राजपथों का अलंकार करे, विजय की घोषणा करे और मंगलवाद्यों के साथ उत्तर की अगवानी करे। इसके बाद राजा ने सैरंध्री से कहा–"तुम

जल्दी पांसे ले आओ, मुझे कंक के साथ जुआ खेलना है।"

थोड़ी ही देर में वे दोनों जुआ खेलने लगे, तब राजा विराट ने युधिष्ठिर से कहा–"देखते हो न, कंकभट्ट! मेरे पुत्र ने अनेक महावीरों को पराजित किया है।"

"बृहन्नला के सारथी रहते वह क्यों विजयी न होगा?" युधिष्ठिर ने जवाब दिया।

राजा विराट क्रोध से भर उठा और बोला–"अरे कमबख्त ब्राह्मण, तुम उस नपुंसक की मेरे पुत्र के साथ तुलना करते हो? तुम्हें यहां तक मालूम नहीं कि क्या बातें कहनी हैं या क्या नहीं? इस बार

मैं तुम्हें क्षमा कर देता हूँ, फिर कभी इन बातों को दुहराया तो तुम्हारे प्राणों के लिए खतरा पैदा होगा । समझे ?"

"भीष्म, द्रोण, अश्वत्थामा, कर्ण, कृपाचार्य इत्यादि कौरव योद्धाओं को स्वयं इन्द्र भी पराजित नहीं कर सकता, उन्हें हराने की शक्ति केवल बृहन्नला रखता है, बृहन्नला की सहायता के होते आप के पुत्र को उन वीरों को पराजित करने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।" युधिष्ठिर ने फिर कहा ।

विराट का क्रोध और भड़क उठा– "फिर तुम यही बात कहते हो ?" इन शब्दों के शाथ उसने युधिष्ठिर के चेहरे पर पांसे फेंक दिये । इससे युधिष्ठिर की नाक पर चोट आयी और खून बहने लगा । खून के नीचे गिरने के पहले ही द्रौपदी ने अपने हाथ में लिया, इसके बाद द्रौपदी ने युधिष्ठिर का आशय समझा और एक सोने का पात्र लाकर नाक से बहनेवाले खून को उसमें गिरने दिया ।

इसी सपय द्वारपाल ने विराट को सूचना दी कि राजकुमार उत्तर तथा बृहन्नला लौट आये हैं ।

"मैं बड़ी आतुरता के साथ उन दोनों को देखना चाहता हूँ । उन्हें शीघ्र मेरे पास ले आओ ।" विराट ने द्वारपाल से कहा ।

पर युधिष्ठिर ने द्वारपाल से गुप्त रूप में कहा–"तुम उत्तर को लिवा लाओ, पर बृहन्नला को नहीं । बृहन्नला की यह प्रतिज्ञा है कि युद्ध में छोड़कर बाकी समयों में यदि कोई मुझे घायल करेगा तो उसे वह मार डालेगा । यदि वह मेरे खून को देखेगा तो तुम्हारे राजा का सपरिवार सर्वनाश कर बैठेगा ।"

थोड़ी देर बाद विराट की सभा में अकेले उत्तर ने प्रवेश किया, पहले राजा विराट के चरणों को प्रणाम किया, तदुपरांत युधिष्ठिर के चरणों पर प्रणाम करके उनकी नाक से बहनेवाले खून को देख दुख के साथ पूछा–"इन महानुभाव को

किसने घायल किया? यह दुष्ट कार्य किसने किया?"

"ये बुद्धू तुम्हें छोड़ उस नपुंसक की प्रशंसा कर रहा था, इसलिए क्रोध में आकर मैंने ही इसे मारा।" विराट ने जवाब दिया।

"महाराज! आपने कैसी बात की? ब्राह्मण का क्रोध दावानल की भाँति जला डालेगा। इसलिए आप इन्हें शांत कीजिये।" उत्तर ने अपने पिता को समझाया।

राजा विराट ने युधिष्ठिर से क्षमा माँगी तब युधिष्ठिर ने कहा–"राजन्, मेरा क्रोध कभी का शांत हो गया है। इससे बड़ी हानि आपके देश के लिए तब होती जब मेरा ख़ून जमीन पर गिरता।"

थोड़ी देर में युधिष्ठिर की नाक से ख़ून का बहना बंद हो गया, उसी वक़्त उत्तर बृहन्नला को वहाँ पर ले आया। बृहन्नला राजा विराट तथा कंक को प्रणाम करके खड़ा हो गया।

तब विराट ने उत्तर से कहा–"बेटा, तुमने सचमुच यह साबित किया कि तुम मेरे योग्य पुत्र हो! तुम जैसे वीर ढूँढे भी नहीं मिलेंगे। कर्ण तो बड़ा पराक्रमी है, उसके साथ तुमने युद्ध कैसे किया? भीष्म जैसे महान योद्धा को तुम कैसे हरा सके? द्रोण और उनके पुत्र अश्वत्थामा पहुँचे हुए वीर हैं। कृपाचार्य को देखते ही बड़े से बड़े वीर भी थर थर काँप उठते हैं। दुर्योधन तो है ही। ऐसे महान वीरों को पराजित करके तुम हमारी गायों को छुड़ा लाये हो! समझ में नहीं आता कि मैं किन शब्दों में तुम्हारी प्रशंसा करूँ?"

अपनी प्रशंसा सुनकर उत्तर ने जवाब दिया–"पिताजी, गायों को मैंने नहीं छुड़ाया, शत्रुओं को भी मैंने पराजित नहीं किया, किसी देवता ने यह सब किया है। शत्रु को देख मैं भागने लगा। उस वक़्त मुझे रोककर उसने रथ पर बिठाया और मुझे सारथी बनाकर उसीने युद्ध किया और वही विजयी हुआ!"

शिवपुराण

[१९]

आदि काल में जब देवता और राक्षसों के बीच युद्ध होते थे, तब देवता अधिक संख्या में मर जाते थे। इसलिए सभी देवता मेरु पर्वत में जाकर भगवान विष्णु से मिले और उनसे प्रार्थना की कि वे कृपा करके उन्हें ऐसा वर दे जिससे उनकी मृत्यु ही न हो।

"तुम लोग दानवों के साथ मिल कर क्षीर सागर में समस्त औषधों को डाल दो। तब मंदर पर्वत को मथानी बना कर मथ दो तो क्षीर सागर से अमृत निकलेगा। उसके सेवन से तुम लोग अमर बन जाओगे।" विष्णु ने देवताओं को समझाया।

देवताओं ने जाकर मंदर पर्वत को उखाड़ना चाहा, मगर वह हिला तक नहीं। तब फिर देवता मेरु पर्वत के पास गये और विष्णु से बताया कि वे मंदर पर्वत को हिला तक नहीं पा रहे हैं।

इस पर विष्णु ने आदिशेष को आदेश दिया-"तुम इन देवताओं के साथ जाकर मंदर पर्वत को उखाड़ डालो और क्षीर सागर में डाल दो।" आदि शेष ने विष्णु के आदेश का पालन किया।

देवताओं ने फिर विष्णु से प्रार्थना की, तब विष्णु ने महा कूर्म का रूप धारण कर अपनी पीठ पर मंदर पर्वत को ढोने को मान लिया।

इस तरह सारे प्रयत्न तो हो गये, लेकिन मथने के लिए मथानी का रस्सा न मिला, तब वासुकी ने रस्से का काम देने को मान लिया। देवता और दानव मिल कर क्षीर

अंतिम पृष्ठ का चित्र

समय तक क्षीर सागर का मंथन किया तो उसमें से अमृत नहीं निकला, बल्कि हालाहल निकल आया और वह तेज़ी के साथ चारों ओर फैलने लगा।

इसे देख सब लोग भयभीत हो उठे। उनसे कुछ करते नहीं बना, वे लोग कैलास की ओर भाग गये और वहाँ पर शिवजी को देख प्रार्थना करने लगे-"हे देव देव, हालाहल तीनों लोकों को जला रहा है। उससे हमारी रक्षा कीजिये। सभी लोकों के ईश्वर आप ही हैं। आपका परम तेज देवताओं, इंद्र, ब्रह्मा तथा विष्णु के लिए भी आश्चर्यजनक मालूम हो रहा है।"

सागर को मथने लगे। देवताओं ने वासुकी का सर पकड़ना चाहा, लेकिन राक्षसों ने नहीं माना। वे कहने लगे-"क्या हम वासुकी की पूँछ पकड़ेंगे? यह सब नहीं चलने का? हम तो वासुकी के सर को पकड़ेंगे!" इस तरह हठ करके राक्षसों ने वासुकी का सर पकड़ा और पूंछ का भाग देवताओं की ओर बढ़ाया।

समुद्र-मंथन के समय वासुकी के मुँह से जो धुआ और ज्वालाएँ निकलीं जिनसे राक्षस बहुत ही परेशान हो गये। उससे देवता भी झुलस उठे, मगर उन्हें कोई पीड़ा नहीं हुई। देवता और दानवों ने इस तरह वड़ी मेहनत उठा कर काफ़ी

उनकी बुरी हालत पर शिवजी द्रवित हो पार्वती से बोले-"देखती हो न? इन लोगों ने क्षीर सागर का मंथन किया तो कालकूट विष उत्पन्न हो गया जिससे ये सारे लोक कैसे त्रस्त हैं? इन्हें अभय देना हमारा कर्तव्य है। इसलिए मैं विष का पान करूँगा। हमें तो जगत की रक्षा करनी है।"

शिवजी की बात पार्वती ने मान ली। इस पर शिवजी ने सारे लोकों में फैलने वाले विष को इकट्ठा करके अपनी हथेली में रखा और उसे निगले बिना कंठ में ही रख लिया। महेश्वर पर भी विष अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रहा। उनका कंठ

काला हो गया। उस समय से शिवजी का नाम नील कंठ पड़ा। वही उस दयावान के लिए एक अलंकार भी बना।

शिवजी के कालकूट निगलने के बाद देवता और दानव पुन: क्षीर सागर का मंथन करने लगे। इस बार उसमें से कामधेनु पैदा हो गयी। उसे यज्ञ के वास्ते ऋषियों ने ले लिया। इसके बाद उच्चैश्रव नामक एक भारी सफ़ेद अश्व निकला, बलि ने उसे पाने की इच्छा प्रकट की। इन्द्र ने भी उसे लेना चाहा, मगर विष्णु ने उसे रोका।

इसके बाद क्षीर सागर से ऐरावत नामक चार दांतों वाला एक सफ़ेद हाथी पैदा हुआ, फिर सागर में से क्रमश: एक पारिजात और अप्सराएँ पैदा हुईं। इसके बाद ज्योतिर्मती लक्ष्मी देवी पैदा हुई। उसने स्वयं विष्णु के वक्षस्थल को स्वीकार किया। लक्ष्मी देवी के साथ क्षीर सागर से चन्द्रमा पैदा हुआ।

इन सबके बाद क्षीर सागर में से धन्वंतरी अमृत कलश लेकर बाहर आया। तुरंत दानव उस अमृत कलश को खींच कर ले गये और दूर जाकर आपस में लड़ने लगे। इस पर देवताओं ने विष्णु से प्रार्थना की, विष्णु ने उन्हें समझाया—"तुम लोग चिंता न करो। मैं कोई उपाय करके अमृत तुम्हें दिला दूँगा।"

दूसरे ही क्षण विष्णु अत्यंत आकर्षक मोहनी का रूप धारण कर दानवों के पास

पहुँचे। वे सब मोहिनी को देख चकित हो जड़वत से हो गये। सबने मोहिनी के पास जाकर कहा–"हम लोग इस अमृत के वास्ते आपस में लड़ रहे हैं। तुम न्यायपूर्वक इसे हमें बांट दो।"

"मैं जो कुछ करूँगी, तुम उसे मान जाओगे तो मैं बांट दूँगी।" मोहिनी ने कहा। दानवों ने उसकी बात मान ली।

मोहिनी ने देवताओं और दानवों को अलग-अलग पंक्तियों में बिठाया और वह पहले देवताओं की पंक्ति में अमृत बांटने लगी। दानवों ने मोहिनी को वचन दिया था कि वह जो भी करेगी, मान लेंगे, इसलिए कोई आपत्ति न उठायी। सभी देवताओं के अमृत पान करने के बाद विष्णु ने मोहिनी का रूप बदल डाला।

शिवजी ने सुना कि विष्णु ने मोहिनी का रूप धारणकर दानवों को दगा दे देवताओं में अमृत बांट दिया है, इस पर वह पार्वती के साथ वृषभ वाहन पर सवार हो विष्णु को देखने आया और बोला–"मैंने आपके सभी अवतारों को देखा है, मगर सुना है कि आपने मोहिनी का रूप भी धारण किया है, हम आपके उस रूप को देखने के लिए इतनी दूर चले आये हैं।"

"दानवों को मोहित करने के लिए मैंने जो रूप धारण किया था, वह रूप आपको भी दिखा देता हूँ।" इन शब्दों के साथ विष्णु अदृश्य हो गये, थोड़ी देर बाद मोहिनी के रूप में गेंद खेलते दिखाई दिये।

मोहिनी के रूप को देखते ही शिवजी अपने साथ रहने वाली पार्वती तथा प्रमद गणों की बात भी बिलकुल भूल गये। सबके देखते शिवजी मोहिनी का पीछा करने लगे। उसी वक़्त उन्हें स्मरण आया कि यह सब तो विष्णु की माया है। तब विष्णु ने शिवजी की आत्मनिष्ठा की प्रशंसा की।

इसके उपरांत शिवजी विष्णु से विदा लेकर पार्वती के साथ कैलास को लौट आये।

संसार के आश्चर्य :

१२९. अपूर्व प्रपात "एंजेल"

पूर्वी वेनिज्यूला (दक्षिण अमेरिका) का यह प्रपात संसार के सभी प्रपातों से ज्यादा ऊँचा है। इसकी ऊँचाई ३,२१२ फुट है याने आधी मील से ज्यादा है। नयागरा प्रपात इसमें पंद्रहवा हिस्सा मात्र है! इस प्रपात की एक और विशेषता यह है कि पहाड़ों पर से पानी के नीचे गिरने से निर्मित प्रपात नहीं है यह। पहाड़ों की अंतर्वाहिनियों के बहने से पत्थरों की परतों में बहने के कारण निर्मित है। इस प्रपात को विमान के द्वारा ही पूरा देखा जा सकता है।

Photo by P. D. Ashtekar
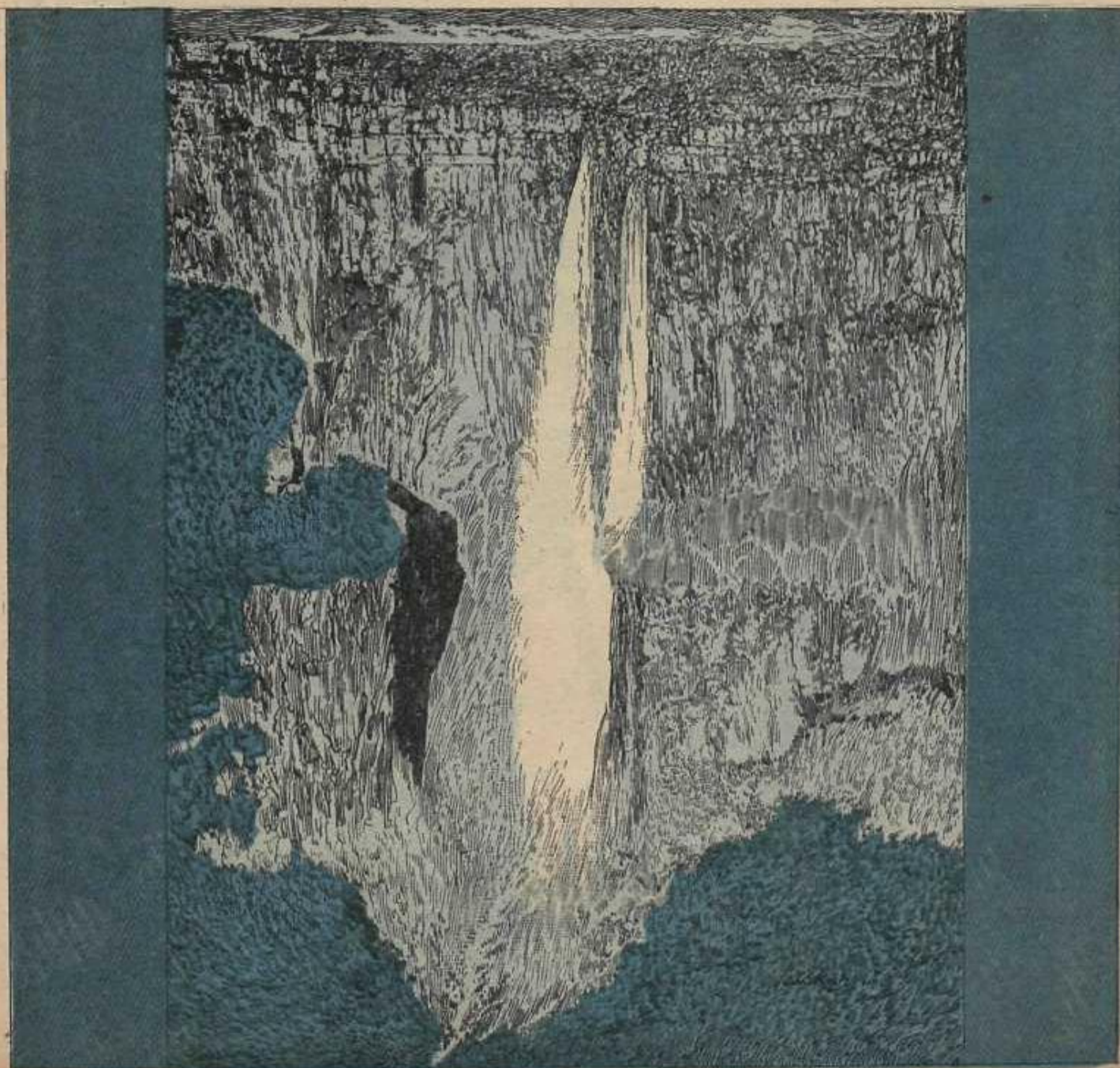
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

रही साजन की छवि निहार !

प्रेषक :
रमेश कुमार माटा,

Photo by P. D. Ashtekar

ब्लॉक ३, चन्दन महल,
११ वाँ रास्ता, बम्बई-५५

आये साजन तेरे द्वार !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ अक्तूबर ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ दिसम्बर के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा मुखपृष्ठ:
हलेबीडु का मंदिर (मैसूर)

तीसरा मुखपृष्ठ:
बृंदावन का उद्यान (मैसूर)

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications,

वाह!
कितना मीठा,
कितना मज़ेदार!
रंगबिरंग
कॅड्बरिज़
मिल्क चॉक्लेट
जेम्स
GEMS
नाचो-गाओ,
धूम मचाओ,
कॅड्बरिज़
जेम्स का
मज़ा उड़ाओ!
सिर्फ़
१ रु.
AIYARS-C.165 HN

हर घर में सबकी मनपसन्द
लिपटन की हिमालयन गोल्डन डस्ट चाय
बेशक उम्दा चाय
ठीक आपके मन मुताबिक
लिपटन की हिमालयन गोल्डन डस्ट—ज़ोरदार लिकर और बढ़िया खुशबू से दिल खुश हो जायेगा। लिपटन की हिमालयन गोल्डन डस्ट—पीकर संतोष, पिलाकर संतोष। घर में लाइये। घर के लोग भी खुश, मेहमान भी खुश।
LIPTON'S
GOLDEN DUST TEA
सिर्फ़ पैकेट की चाय ही रहती है तरोताज़ा और खुशबू से भरपूर
LIPTON